खण्ड-348, अंक-1
मंगलवार, 7 माघ, शक संवत् 1902
(27 जनवरी, 1981 ई0)

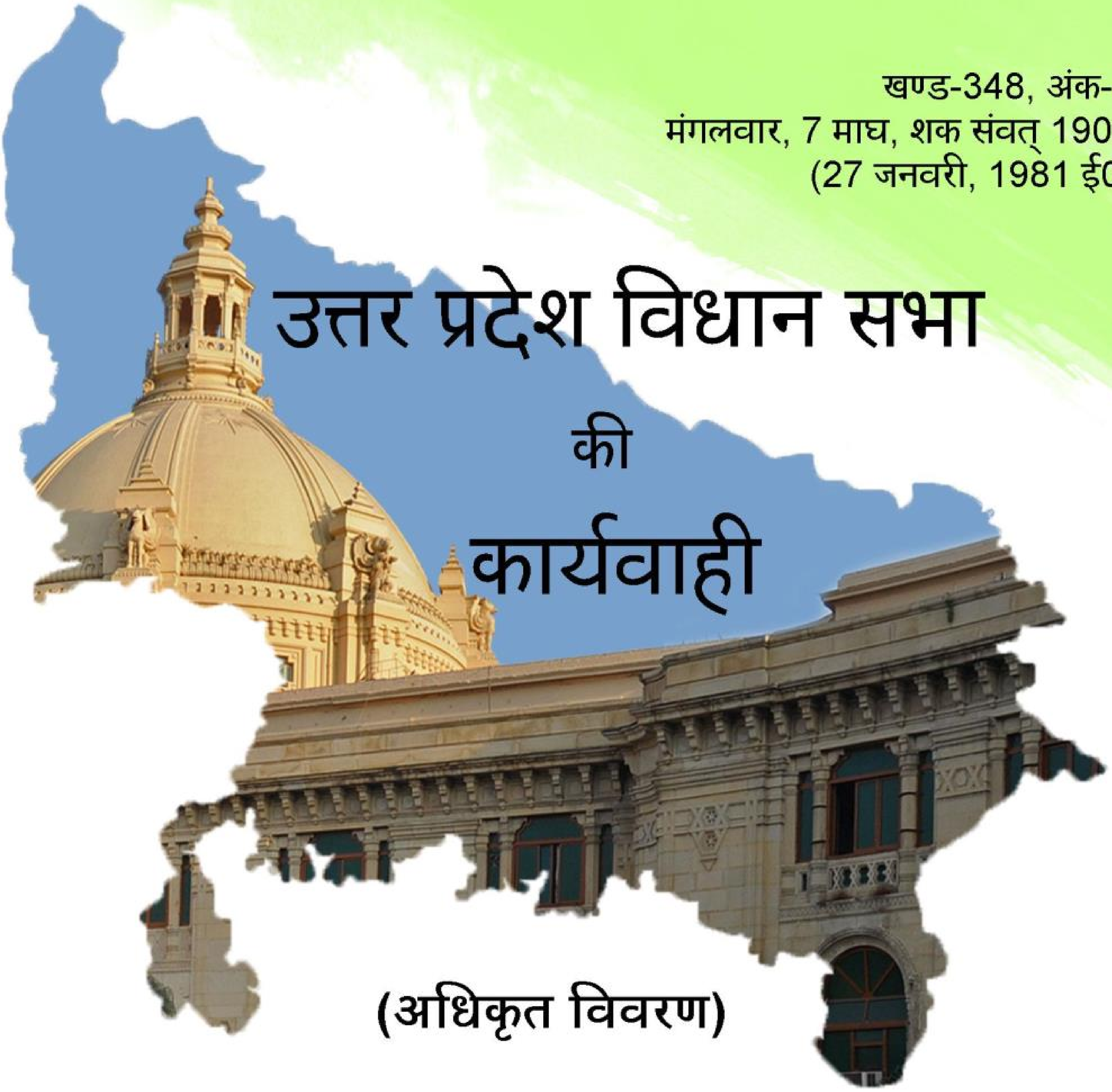

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 348 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
अधीक्षक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, इलाहबाद , उत्तर प्रदेश (भारत)
1981

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य ..	1–4
सभा की कार्यवाही तथा नेता सदन की वैधानिकता के सम्बन्ध में दिये गये औचित्य के प्रश्न को लिये जाने की मांग ..	5–6
श्री राज्यपाल के अभिभाषण के मध्य सभा मण्डप में विरोधी दल के सदस्यों के बहिर्गमन के उपरान्त पुनः सदन में आने पर रोके जाने के सम्बन्ध में औचित्य का प्रश्न ..	6–7
श्री राज्यपाल के अभिभाषण का श्री अध्यक्ष द्वारा आंशिक पाठ भूतपूर्व अध्यक्ष, विधान सभा, श्री जगदीश शरण अग्रवाल के निधन पर शोकोद्गार ..	7–12
विधान सभा सदस्य, श्री ब्रज बल्लभ के निधन पर शोकोद्गार,	12–16
भूतपूर्व सदस्य, श्री राम आसरे वर्मा, श्री मुमताज मुहम्मद खां, श्री परशुराम राय तथा श्रीमती तारा अग्रवाल के निधन पर शोकोद्गार ..	16–19
आज की शेष कार्यवाही का स्थगन ..	19
नत्थी ..	21–27

विधान सभा सचिवालय उत्तर प्रदेश

विधान सभा
उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश विधान सभा

मंगलवार, दिनांक 27 जनवरी, 1981

विधान सभा की बैठक सभा मन्डप, लखनऊ में 12.30 बजे दिन में अध्यक्ष, श्री श्रीपति मिश्र की अध्यक्षता में आरम्भ हुई :

उपस्थित सदस्य—335

अकबर अहमद, श्री — नैनीताल
अकबर हुसैन, श्री — मुरादाबाद
अकबाल हुसैन, श्री — गोंडा
अजहर ईमाम, श्री — मिर्जापुर
अजीजुर्रहमान, श्री — बिजनौर
अजीत कुमार सिंह, श्री — कानपुर
अनवार खां, श्री — अलीगढ़
अबुल कलाम, श्री — आजमगढ़
अमरनाथ सिंह, श्री (उर्फ अनिल सिंह) — फतेहपुर
अमर सिंह, श्री — सहारनपुर
अम्बा प्रसाद वर्मा, श्री — बरेली
अम्बिका सिंह, श्री — बस्ती
अम्मार रिजवी, श्री — सीतापुर
अलमेलु अम्माल, कुमारी — बस्ती
आजाद कुमार कर्दम, श्री — आगरा
इन्द्रजीत, श्री — फतेहपुर
इन्द्र प्रताप सिंह, श्री (लल्लू) — बहराइच
ईश्वर शरण विद्यार्थी, श्री — इलाहाबाद
उदयवीर सिंह, श्री — शाहजहांपुर
उमेश्वर प्रताप सिंह, श्री — गोंडा
उर्मिला अग्निहोत्री, कुमारी — एटा
ऊदल, श्री — वाराणसी
ए० सी० ग्राइस, श्री — नाम निर्देशित आंग्ल भारतीय
ओम प्रकाश जिन्दल, श्री — आगरा
ओम प्रकाश रिछारिया, श्री — ललितपुर
कन्हैया लाल, श्री — मथुरा
कमला दरियाबादी, श्रीमती — कानपुर
कमला देवी, श्रीमती — हरदोई
कमला प्रसाद सिंह, श्री — जौनपुर
कमला साहनी, श्रीमती — बस्ती
कल्यान सिंह, श्री — बरेली
कल्लू राम, श्री — मिर्जापुर
काजी मोहिउद्दीन, श्री — सहारनपुर
काशीनाथ मिश्र, श्री — बलिया
किरनपाल सिंह, श्री — बुलन्दशहर
किशोरी शुक्ल, श्रीमती — गोरखपुर
कुंवर बहादुर मिश्र, श्री — हमीरपुर
कुदसिया बेगम, श्रीमती — हरदोई
कुबेर भन्डारी, श्री — देवरिया
कृष्ण कुमार शुक्ल, श्री — रायबरेली
कृष्णदत्त, श्री (उर्फ बालराज) — फतेहपुर
कृष्ण मगन सिंह, श्री — बाराबंकी
कृष्णवीर सिंह कौशल, डाक्टर — आगरा
केदार सिंह, श्री — आजमगढ़
केदारनाथ सिंह, श्री — गोरखपुर
केशरी प्रसाद, श्री — जौनपुर
केशोराम, श्री — बदायूं
कैलाश टन्डन, श्री — वाराणसी
कैलाश चन्द्र, श्री — एटा
कैलास प्रसाद, श्री — गोरखपुर
खरपत, श्री — वाराणसी
खुदादीन अन्सारी, श्री — देवरिया
खुर्शेद अहमद, श्री — बहराइच
खैरुल बशर, श्री — आजमगढ़
ख्वाजा हलीम, श्री — अलीगढ़
गंगा सागर शंखवार, श्री — कानपुर
गजेन्द्र सिंह, श्री — बाराबंकी
गया सिंह, श्री — उन्नाव
गुलाब सेहरा, श्री — आगरा
गेंदा देवी, श्रीमती — बस्ती
गोपी नाथ दीक्षित, श्री — उन्नाव
गोपी नाथ वर्मा, श्री — फैजाबाद
गोरे लाल शाक्य, श्री — इटावा
गौरी देवी, श्रीमती — गोरखपुर
गौरी शंकर एडवोकेट, श्री — इटावा
गौरी शंकर भैय्या, श्री — बलिया
चन्द्र प्रकाश शर्मा, श्री — बांदा
चन्द्रबली ब्रहमचारी, श्री — आजमगढ़
चन्द्र मोहन सिंह नेगी, श्री — पौड़ी गढ़वाल
चन्द्र शेखर त्रिवेदी, श्री — लखनऊ
चन्द्र सिंह, श्री — मेरठ

चरनजीत सिंह, श्री	पीलीभीत
चारु चन्द्र ओझा, श्री	पिथौरागढ़
चेतराम गंगवार, श्री	बरेली
छत्तर सिंह, श्री	बुलन्दशहर
छेदा लाल चौधरी, श्री	खीरी
छदी लाल, श्री	गोंडा
जंग बहादुर, श्री	जौनपुर
जगदीश सिंह यादव, श्री	मनपुरी
जगदीश सिंह, श्री	शाहजहांपुर
जटाशंकर सिंह, श्री	बहराइच
जनार्दन प्रसाद ओझा, श्री	गोरखपुर
जयदीप सिंह, श्री	बरेली
जसवन्त सिंह विष्ट, श्री	अल्मोड़ा
जितेन्द्रपाल सिंह, श्री	मुरादाबाद
जियाराम शुक्ल, 'विकल साकेती', श्री	फैजाबाद
जीराज सिंह मौर्य, श्री	मुरादाबाद
झग्गड़ सिंह, श्री	मेरठ
झिलमिट राम, श्री	गाजीपुर
तपेश्वर, श्री	आजमगढ़
तेजनरायन त्रिवेदी, श्री	खीरी
तेज बहादुर गंगवार, श्री	पीलीभीत
तेज बहादुर सिंह, श्री	जौनपुर
त्रिवेनी, श्री	आजमगढ़
दयाल कृष्ण, श्री	मथुरा
दलगंजन सिंह, श्री	जालौन
दल सिंगार, श्री	आजमगढ़
दामोदर शर्मा, श्री	मेरठ
दिवाकर विक्रम सिंह, श्री	बस्ती
दीना नाथ, श्री	बस्ती
दीपक कुमार, श्री	मुजफ्फरनगर
दीप नरायन वन महन्थ, श्री	गोंडा
दीपू उर्फ दीप नारायण, श्री	आजमगढ़
दूधनाथ राजभर, श्री	आजमगढ़
देवी प्रसाद, श्री	बहराइच
देवेन्द्र पान्डेय, श्री	सुल्तानपुर
देवेन्द्र बहादुर सिंह, श्री	कानपुर
द्वारिका नाथ धवन, श्री	देहरादून
धनी राम वर्मा, श्री	इटावा
धनेश्वरी देवी, श्रीमती	वाराणसी
धर्मपाल, डाक्टर	अलीगढ़
धर्मवीर सिंह, श्री	मेरठ
धर्मवीर सिंह त्यागी, श्री	मुजफ्फरनगर
धर्म सिंह, श्री	बुलन्दशहर
ध्रुप राय, श्री	देवरिया
नत्थू लाल, श्री	हरदोई
नन्द किशोर सिंह, श्री	देवरिया
नन्द राम, श्री	बरेली
नरेन्द्र सिंह, श्री	मेरठ
नरेन्द्र सिंह विष्ट, श्री	पिथौरागढ़
नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री	हरदोई
नाजिर अली, श्री	शाहजहांपुर
निर्भय नारायण सिंह, श्री (उर्फ लाल बाबू)	बलिया
निर्मल कुमार, श्री	फैजाबाद
नेत्रपाल सिंह, श्री	एटा
पंचानन, श्री	आजमगढ़
पन्ने लाल, श्री	गोरखपुर
परमाई लाल, श्री	हरदोई
परागी लाल चौधरी, श्री	सीतापुर
पहलवान, श्री	जौनपुर
पारवती देवी, श्रीमती	बाराबंकी
पुरुषोत्तम, श्री	मिर्जापुर
पूरन चन्द्र, श्री	अलीगढ़
प्रताप नारायण द्विवेदी, श्री	हमीरपुर
प्रदीप कुमार यादव, श्री	बाराबंकी
प्रभाकर नाथ द्विवेदी, श्री	प्रतापगढ़
प्रभू नारायण सिंह, श्री	जौनपुर
प्रमोद कुमार, श्री	प्रतापगढ़
प्रेमवती, श्रीमती	बदायूं
प्रेमवती तिवारी, श्रीमती	लखनऊ
फखरे आलम, श्री	बदायूं
फिरंगी प्रसाद विशारद, श्री	गोरखपुर
बंशीधर, श्री	रामपुर
बंशीधर राज, श्री	खीरी
बच्चा पाठक, श्री	बलिया
बदन सिंह, श्री	आगरा
बनवारी राम, श्री	वाराणसी
बब्बन सिंह, श्री	बलिया
बलराम सिंह यादव, श्री	इटावा
बल्देव सिंह आर्य, श्री	उत्तर काशी
बाबू राम, श्री	पीलीभीत
बाबू लाल, श्री	गोंडा
बाबू लाल, श्री	हमीरपुर
बाबू सिंह, श्री	अलीगढ़
बिहारी लाल, श्री	नैनीताल
बिहारी लाल दोहरे, श्री	फर्रुखाबाद
बृज किशोर मिश्र, डा०	देवरिया
बेनी बाई, श्रीमती	झांसी
बैजनाथ कुरील, श्री	लखनऊ

विधान सभा

बैजनाथ प्रसाद कुशवाहा, श्री	इलाहाबाद
भगवती सिंह विशारद, श्री	उन्नाव
भगवानदीन कुशवाहा, श्री	कानपुर
भानु प्रताप सिंह, श्री	बरेली
भास्कर पान्डेय, श्री	देवरिया
भीखा लाल, श्री	उन्नाव
भीम सिंह, श्री	मेरठ
भूधर नारायण मिश्रा, श्री	कानपुर
भूप सिंह केन, श्री	गाजियाबाद
भोला पान्डेय, श्री	बलिया
मंगलदेव, श्री	गोंडा
मन्डलेश्वर सिंह, श्री	आगरा
मथुरा प्रसाद पान्डेय, श्री	बस्ती
मन्जूर अहमद, श्री	मेरठ
मलिक मुहम्मद कमाल यूसुफ, श्री	बस्ती
मशरूर जाफरी, श्री उर्फ शकेज	गोंडा
महाबीर सिंह, श्री	सहारनपुर
महारानी दोहरे, श्रीमती	इटावा
महेश प्रसाद, श्री	देवरिया
मान्डवी प्रसाद सिंह, श्री	वाराणसी
माधव प्रसाद, श्री	फैजाबाद
मानपाल सिंह एडवोकेट, श्री	एटा
मान बहादुर, श्री	गोंडा
मित्रसेन, श्री	फैजाबाद
मीर मजहर अली, श्री	बदायूं
मुईद अहमद, श्री	सुल्तानपुर
मुन्शी लाल, श्री	मैनपुरी
मुरलीधर मुनीम, श्री	गोंडा
मुहम्मद आजम खां, श्री	रामपुर
मेंहदी असगर, श्री	मुजफ्फरनगर
मोती लाल देहलवी, श्री	कानपुर
मोहन लाल, श्री	हमीरपुर
मोहन सिंह, श्री	देवरिया
मोहम्मद अबरार अहमद, श्री	बदायूं
मोहम्मद उमर, डाक्टर	गोंडा
मोहम्मद नबी, श्री	बस्ती
मोहम्मद रफी सिद्दीकी, श्री	लखनऊ
मोहम्मद वसीम, हाजी	रायबरेली
मोहम्मद सफीउर्रहमान अन्सारी, श्री	वाराणसी
यदुनाथ, श्री	मिर्जापुर
यशपाल सिंह, श्री	बुलन्दशहर
योगन्द्र सिंह, कुंवर	फर्रुखाबाद
योगेश चन्द्र, श्री	वाराणसी
रईसउद्दीन वारसी, श्री	मुरादाबाद
रघुराज प्रसाद उपाध्याय, श्री	गोंडा

रणजीत सिंह जूदेव, श्री	झांसी
रती राम, श्री	बिजनौर
रमा कान्त मिश्रा, श्री	इलाहाबाद
रमेश चन्द्र, श्री	रायबरेली
राज किशोर राव, श्री	बहराइच
राज कुमार राय, श्री	आजमगढ़
राजपति देवी, श्रीमती	सुल्तानपुर
राजमंगल पान्डेय, श्री	देवरिया
राजेन्द्र अग्निहोत्री, श्री	झांसी
राजेन्द्र कुमार गुप्त, श्री	सीतापुर
राजेन्द्र त्रिपाठी, श्री	इलाहाबाद
राजेन्द्र सिंह, श्री	अलीगढ़
राजेन्द्र सिंह यादव, श्री	फर्रुखाबाद
राधे श्याम वर्मा, श्री	फर्रुखाबाद
राम अवध प्रसाद, श्री	बस्ती
राम आसरे पासबान, श्री	बस्ती
राम आसरे वर्मा, श्री	हरदोई
राम औतार दीक्षित, श्री	हरदोई
राम करन, श्री	वाराणसी
राम कुंवर सिंह, श्री	आजमगढ़
राम कुमार भार्गव, श्री	सीतापुर
राम कृष्ण उपाध्याय, डा०	जौनपुर
राम कृष्ण माहेश्वरी, श्री	मुरादाबाद
राम गोविन्द, श्री	बलिया
राम चन्द्र, श्री	वाराणसी
राम चरण सिंह, श्री	मिर्जापुर
राम जनम सिंह, श्री	वाराणसी
रामजी राम, श्री	फैजाबाद
राम धनी, श्री	गाजीपुर
राम नरायन, श्री	गाजीपुर
राम नरेश शुक्ल, श्री	प्रतापगढ़
राम नारायण पाठक, श्री	कानपुर
रामपाल सिंह, श्री	मुरादाबाद
राम प्यारे पान्डेय, श्री	फतेहपुर
राम भजन लाल, श्री	खीरी
राम यश सिंह, श्री	सहारनपुर
राम लाल, श्री	सीतापुर
राम लाल वर्मा, श्री	हरदोई
राम शिरोमणि, श्री	जौनपुर
राम समुझावन, श्री	जौनपुर
राम सागर, श्री	बाराबंकी
राम सिंह, श्री	सहारनपुर
राम सिंह खन्ना, श्री	बरेली
राम सेवक, श्री	सुल्तानपुर
राम स्वरूप निम, श्री	सहारनपुर
राम स्वरूप वर्मा, श्री	कानपुर

राम हर्ष मिश्र, श्री — बहराइच
राम हर्ष राय, श्री — गाजीपुर
रामेश्वर नाथ चौबे, श्री — बरेली
रामेश्वर प्रसाद, श्री — बांदा
रिजवानुर्रहमान किदवई, श्री — बाराबंकी
रियासत हुसैन, श्री — मुरादाबाद
रुद्र प्रताप सिंह, श्री — देवरिया
रूप राम, श्री — शाहजहांपुर
रुल्हा सिंह, श्री — सहारनपुर
लटूरी सिंह, श्री — एटा
लल्लू सिंह चौहान, श्री — मैनपुरी
लाल प्रताप सिंह, श्री — प्रतापगढ़
लालसा, श्री — आजमगढ़
लोकपति, श्री — मिर्जापुर
लोकमणि शर्मा, श्री — मथुरा
बासुदेव सिंह, श्री — प्रतापगढ़
विजय कुमार, श्री — लखनऊ
विजय पाल सिंह, श्री — गाजियाबाद
विजय शंकर सिंह, श्री — गाजीपुर
विजय सिंह राना, श्री — आगरा
विद्या भूषण, श्री — मुजफ्फरनगर
विद्या सागर नौटियाल, श्री — टिहरी गढ़वाल
विनोद कुमार तिवारी, डा० — पीलीभीत
विमल प्रसाद तिवारी, श्री — फर्रुखाबाद
विमला राकेश, श्रीमती — सहारनपुर
विशन लाल, श्री — बिजनौर
विश्राम दास, श्री — इलाहाबाद
विष्णु दयाल वर्मा, श्री — मैनपुरी
वीर बहादुर सिंह, श्री — गोरखपुर
वीरेन्द्र सिंह ढाका, कुंवर — गाजियाबाद
वृद्धि नारायन सिंह, श्री — वाराणसी
शंकर सिंह, श्री — जालौन
शम्भूनाथ, श्री — आजमगढ़
शरीयतुल्ला, श्री — मुरादाबाद
शिव दर्शन, श्री — रायबरेली
शिव नरेश, श्री — बांदा
शिव नारायण सिंह नेगी, श्री — नैनीताल
शिवपाल सिंह, श्री — उन्नाव
शिवमंगल सिंह, श्री — मैनपुरी
शौनाथ सिंह, श्री — बिजनौर
श्याम नरायन तिवारी, श्री — गोरखपुर
श्याम लाल बाजपेयी, श्री — बाराबंकी
श्याम सिंह, श्री — बिजनौर
श्याम सूरत उपाध्याय, श्री — इलाहाबाद
श्रीपति मिश्र, श्री — सुल्तानपुर
संकठा प्रसाद शास्त्री, श्री — वाराणसी
संजय सिंह, श्री — सुल्तानपुर
सईदुल हसन, श्री — बुलन्दशहर
सच्चिदानन्द, श्री — उन्नाव
सतीश अजमानी, श्री — खीरी
सत्यपाल सिंह, श्री — शाहजहांपुर
सन्त बक्स रावत, श्री — लखनऊ
सन्तोष कुमारी, श्रीमती — बदायूं
सरदार सिंह, श्री — मथुरा
सीताराम निषाद, श्री — फैजाबाद
सुखदा मिश्रा, श्रीमती — इटावा
सुग्रीव सिंह, श्री — देवरिया
सुन्दर सिंह, श्री — बहराइच
सुमन लता दीक्षित, कुमारी — कानपुर
सुरेन्द्र कपिल, श्री — सहारनपुर
सुरेन्द्र कुमार, श्री (उर्फ मुन्नी) — गाजियाबाद
सुरेन्द्र प्रताप नारायण, श्री — बस्ती
सुरेन्द्र सिंह चौहान, श्री — अलीगढ़
सुरेश दत्त पालीवाल, श्री — जालौन
सुल्तान सिंह, श्री — मुरादाबाद
सूबेदार सिंह, श्री — मैनपुरी
सूरजभान, पंडित — अलीगढ़
सूर्यनाथ उपाध्याय, श्री — जौनपुर
सैयद जकीउद्दीन, श्री — मेरठ
सोमांश प्रकाश, श्री — मुजफ्फरनगर
स्वामी नेमपाल, श्री — बुलन्दशहर
स्वामी प्रसाद सिंह, श्री — हमीरपुर
हंसराज सिंह वर्मा, श्री — एटा
हरगोविन्द वर्मा, श्री — सीतापुर
हरदेव, श्री — बलिया
हरनरायन सिंह, श्री — रायबरेली
हरवंश प्रसाद पान्डेय, श्री — बांदा
हरिद्वार पान्डेय, श्री — गोरखपुर
हरि प्रसाद, श्री — उन्नाव
हरिबंश सहाय, श्री — देवरिया
हरी किशन श्रीवास्तव, श्री — कानपुर
हरीशंकर, श्री — हरदोई
हाफिज मोहम्मद सिद्दीक, श्री — मुरादाबाद
हुकम सिंह, श्री — मुजफ्फरनगर
हेमचन्द्र निमेष, श्री — मेरठ

नोट—मुख्य मन्त्री, श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह तथा श्रम मन्त्री, श्री जगदीश चन्द्र दीक्षित भी सदन में उपस्थित थे ।

सदन की कार्यवाही तथा नेता सदन की वैधानिकता के सम्बन्ध में दिए गए औचित्य के प्रश्न को लिए जाने की मांग

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त—

मान्यवर, आज शून्य प्रहर नहीं है तो जो हमने औचित्य के प्रश्न की एक सूचना आज दिया है उसको आप कब लेंगे ?

श्री अध्यक्ष—

कल लेंगे ।

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त—

मान्यवर, उसको सुन आज लें चाहे व्यवस्था कल दें ।

श्री राम आसरे वर्मा—

निधन के निर्देश हो जायं तो औचित्य के प्रश्न ले लें क्योंकि सदन की मर्यादा से सम्बन्धित बुनियादी बातों पर प्रश्न दिए गए हैं इसलिए इस पर आप अपनी व्यवस्था दे दें ।

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त—

किस समय लेंगे यह बता दें, चूंकि महत्वपूर्ण प्रश्न है ।

श्री अध्यक्ष—

अभी तो कुछ शुरू ही नहीं हुआ है ।

श्री मोहन सिंह—

मान्यवर, वैधानिकता के बारे में मेरा निवेदन सुन लें । मान्यवर, भारत के संविधान के अनुसार महामहिम राज्यपाल मुख्य मंत्री मुकर्रर करते हैं और मुख्य मंत्री पदेन इस सदन के नेता माने जाते हैं । सदन तब पूर्ण माना जाता है जब उसका नेता हो । सदन की परिपाटी रही है कि जो आदमी जिस सदन का सदस्य होगा वही उस सदन का नेता होगा । मान्यवर, इस सम्बन्ध में संसदीय प्रणाली और महेश्वर नाथ कौल के अनुसार जब इस सदन का नेता अवैधानिक रूप से बैठा हो तो कार्यवाही वैधानिक कैसे हो सकती है ?

श्री अध्यक्ष—

इसी विषय पर एक सूचना श्री राम आसरे वर्मा, श्री भीखा लाल और श्री प्रदीप कुमार ने औचित्य का प्रश्न उठाने के लिए दिया है । इस पर सुनकर हम व्यवस्था देंगे, लेकिन कार्यवाही तो प्रारम्भ होने दें ।

श्री मोहन सिंह—

वैधानिक रूप से जब सदन बैठा हो तभी तो कार्यवाही वैधानिक होगी इसलिए मेरे औचित्य के प्रश्न को सुन लें और तब यदि बैठक को संवैधानिक कहेंगे तो ठीक है ।

श्री राम आसरे वर्मा--

क्या सदन किसी अजनबी की उपस्थिति में चलाया जा सकता है । जब तक इसका हल नहीं होगा तब तक वैधानिक कार्यवाही कैसे होगी ?

श्री मोहन सिंह--

इस सदन का नेता कोई नहीं है ।

श्री अध्यक्ष--

सदन के नेता की वैधानिकता पर जो प्रश्न दिया है उसको हम सुनेंगे और उस पर व्यवस्था देंगे । जहां तक सदन का वैधानिक होने का और कार्य संचालन का प्रश्न है, तो हम सदन को चला सकते हैं ।

श्री मोहन सिंह--

शकधर और कौल की पुस्तक में पेज 122 पर देखें ।

श्री राज्यपाल के अभिभाषण के मध्य सभा मण्डप में विरोधी दल के सदस्यों के बहिर्गमन के उपरान्त पुनः सदन में आने पर रोके जाने के सम्बन्ध में औचित्य का प्रश्न

*श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त--

मान्यवर, मेरा भी औचित्य का प्रश्न सुन लें । हमने लिखित रूप में, दो प्रतियों में एक औचित्य के प्रश्न की सूचना दिया है कि अभी इसके पहले राज्यपाल इस आदरणीय सदन को सम्बोधित कर रहे थे तो उस समय जनहित विरोधी नीतियों को हम सुनने के लिए यहां नहीं आये, इसलिए लिखित रूप में पत्र दिया था । श्री राजेन्द्र सिंह ने एक पत्र आज इस सम्बन्ध में यहां सदन में पढ़ा और मैंने संसदीय परम्परा का अनुपालन करते हुए इस सदन का बहिष्कार किया और बाहर चला गया । उसके बाद मुझे जिज्ञासा हुई कि मैं अपना साहित्य प्राप्त कर लूं....।

मैं प्रश्न यह उठाना चाहता हूं कि जब मैं राज्यपाल के भाषण के समय अन्दर आना चाह रहा था तो वहां पर उपस्थित द्वार पर रक्षक ने कहा कि आप अन्दर नहीं जा सकते हैं । उसने फिर यह भी कहा कि मैं आपसे यह व्यक्तिगत रूप से नहीं कह रहा हूं, मुझे इस आशय के निदेश दिए गए हैं कि आप प्रवेश द्वार से विरोधी पक्ष के किसी सदस्य को अन्दर न आने दें, तो मान्यवर, मैं वापस चला आता । उसके बाद एक ओर बुजुर्ग से सदस्य आये वो लबी में चले गये, शायद उनको वह पहचानता नहीं था, नहीं तो उनसे भी कहता कि नहीं, आप अन्दर नहीं जा सकते । प्रश्न यह पैदा होता है कि सभा मण्डप के....यह उस समय सभा मण्डप था क्योंकि उस समय विधान सभा नहीं थी । उस समय दोनों सदनों के समवेत ही सदन में माननीय राज्यपाल का अभिभाषण चल रहा था, राज्यपाल दोनों सदनों को सम्बोधित कर रहे थे और लाबी व पटल कार्यालय तक जाने का जो हमारा सुरक्षित अधिकार है, उसे कौन रोक सकता है ? उस समय श्रीमन्, किसने हमको बहिष्कार करने के निर्देश दिए ? आपने तो कोई निदेश दिया नहीं था । विधान सभा रक्षक किसके निदेश का पालन कर रहे थे ? यह बहुत गम्भीर

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

बात है। अभी प्रधान मंत्री ने भी कहा है कि कोई ऐसी बात बरदाश्त नहीं की जायगी जो संविधान को खतरा पैदा करे, तो हम उनको भी याद दिलाना चाहते हैं कि हमारा संसदीय अधिकार है। हमारा बहिष्कार करने का कोई औचित्य है। मैं यह औचित्य का प्रश्न उठाना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष--

आपने अपना प्रश्न उपस्थित कर दिया।

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त--

मैं यह जानना चाहता हूं कि वह कौन है जो हमारे अधिकारों को रौंदना चाहता है ?

श्री रियासत हुसैन--

यह बड़ा गम्भीर प्रश्न है जो माननीय राजेन्द्र कुमार गुप्त जी ने उठाया है। यह उचित होगा कि आप हम लोगों को दो-दो मिनट सुन लें।

श्री अध्यक्ष--

मैं कल ये दोनों प्रश्न लूंगा। आपने इसको बताया है। हमको समझने का समय दीजिए, इतनी जल्दी मैं कैसे इसका उत्तर दे सकता हूं।

श्री भीखा लाल--

जो औचित्य का प्रश्न वर्मा जी ने उठाया है कि यह सदन विधिवत् गठित नहीं है, इस पर निर्णय आप कल देंगे, यह आपको अधिकार है। परन्तु यह सदन विधिवत गठित नहीं है। आप कार्यवाही जो है वह भी निरस्त कर दीजिये, इस पर भी निर्णय दे दें।

(हंसी)

श्री अध्यक्ष--

आपको स्पष्ट है कि इस तरह से जैसे कि कोरम हो, अध्यक्ष पीठासीन हो और माननीय मुख्य मंत्री उपस्थित हों, तो सदन विधिवत् गठित होगा। सदन विधिवत् है, तो फिर आप बैठिये।

श्री राज्यपाल के अभिभाषण का श्री अध्यक्ष द्वारा आंशिक पाठ

श्री अध्यक्ष--

माननीय सदस्यगण,

वर्ष 1981 के प्रथम सत्र के प्रारम्भ पर आपको नव वर्ष की शुभकामनायें।

जिन परिस्थितियों में फरवरी, 1980 में राष्ट्रपति शासन लागू हुआ और जून, 1980 में मेरी सरकार ने शासन की बागडोर सम्भाली, उनसे आप भलीभांति अवगत हैं। पिछले 3-4 वर्षों के दौरान कानून व्यवस्था के क्षेत्र में अत्यधिक अस्थिरता, आर्थिक स्थिति में ह्रास, आवश्यक वस्तुओं के निरन्तर अभाव तथा मुद्रास्फीति से सामान्य जन-जीवन त्रस्त रहा।

(हंसी)

[श्री अध्यक्ष—]

इससे भी अधिक दुःख की बात यह थी कि उस समय के राजनीतिक खिंचाव, साम्प्रदायिक तनाव तथा लोकतांत्रिक सिद्धांतों के प्रति बढ़ रही उपेक्षा से लोगों के और विशेष कर गरीबों के, दलित वर्गों के दिलों में कुण्ठा और निराशा की भावना उत्पन्न हो गई थी। संकीर्ण जातीयता, जर्जर शान्ति व्यवस्था, अनुशासनहीनता तथा बढ़ती हुई महंगाई के कारण चारों ओर अशान्ति और कुव्यवस्था का वातावरण फैल गया था। यह हर्ष का विषय है कि पिछले 6–7 महीनों में मेरी सरकार ने इन सभी समस्याओं का दृढ़ता से मुकाबला किया और राज्य के आर्थिक तथा सामाजिक जीवन का स्तर ऊंचा करने का भरपूर प्रयास किया।

(व्यवधान)

(शोर)

मैं पढ़ कर सुना रहा हूं...।

(व्यवधान)

(पढ़ा हुआ माना जाय की आवाजें)

यदि आप लोग इसे पढ़ा हुआ समझें तो मैं अंतिम पैराग्राफ पढ़े देता हूं :

"माननीय सदस्यगण, मैंने संक्षेप में आपके सम्मुख अपनी सरकार द्वारा किये गये कार्य–कलापों और उसकी नीतियों का उल्लेख किया है। जनतन्त्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि जहां एक ओर विरोधी पक्ष को शासन की नीतियों की आलोचना करने और उनकी कमियों को इंगित करने का अधिकार हो, वहां दूसरी ओर शासन को भी अपना कार्य करने के लिए समुचित अवसर मिले। हिंसा और तोड़–फोड़ की राजनीति समाज के हित में नहीं है। यह भी आवश्यक है कि हम सब मिल कर अपने सामाजिक एवं राजनैतिक स्तर को ऊंचा उठायें और आन्दोलनात्मक प्रवृत्तियों को छोड़कर संकीर्ण तथा दलगत राजनीति से ऊपर उठकर प्रदेश के व्यापक हित को ध्यान में रखें। मुझे आशा ही नहीं, विश्वास भी है कि आप सभी विधायकगण जनतंत्र की सफलता के लिए अपनी सही भूमिका अदा करेंगे और शासन अपनी प्रगतिशील नीतियों तथा उन पर अमल करने की प्रामाणिक योग्यता के फलस्वरूप इस प्रदेश को खुशहाल बनाने में सफल हो सकेगा।" जयहिन्द।

(श्री राज्यपाल के अभिभाषण के लिए देखिए नत्थी 'क' आगे पृष्ठ 21 पर)

भूतपूर्व अध्यक्ष, विधान सभा, श्री जगदीश शरण अग्रवाल के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मन्त्री (श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, काल के थोड़े से अन्तराल में मौत हमारे कुछ साथियों को चुन ही लेती है मृत्यु, मान्यवर, जितनी सुनिश्चित है शायद ही कोई चीज हो और मृत्यु जितनी अनिश्चित है शायद ही कोई वस्तु हो। उसकी सुनिश्चितता जो है वही हमारी उसकी स्वीकृति का आधार बनती है और उसकी सुनिश्चितता जो है वही हमारे शोक का कारण बनती है। भावी सम्बन्धों का निर्णायक विच्छेद या समाप्ति ही मृत्यु है। लेकिन कुछ लोग कुछ ऐसे सम्बन्ध बना जाते हैं, हम लोगों को कुछ ऐसा बांध जाते हैं कि मृत्यु भी उसे तोड़

नहीं पाती है । और उन लोगों की स्मृति हम लोग जितनी बार अपने दिलों में ले आते हैं एक मौत भले ही हो जाय हजार जन्म उनका होता है और उन आत्माओं को, उन लोगों के जीवन को हम लोग अपने हृदय में जिन्दा लिये हुये अपनी चिता तक जाते हैं । ऐसे ही लोगों में से हमारे इस सदन के भूत-पूर्व अध्यक्ष, श्री जगदीश शरण अग्रवाल जी थे और उन्होंने जन जीवन को और जनता के विश्वास को इस तरह से बांधा था कि सन् 55, सन् 57 सन् 62, सन् 67 में विधान सभा के सदस्य रहें और सन् 74 में ग्रेजुएट कांस्टीटुएन्सी से विधान परिषद् में चुन कर आये । इसके पहले सन् 48 से सन् 53 तक बरेली के नगरपालिका के वे अध्यक्ष रहे । 30 वर्ष तक जनता का विश्वास प्राप्त करना एक साधना और सेवा का ही कीर्तिमान हो सकता है । वे मन्त्रि-परिषद् में भी रहे लेकिन इससे अधिक चैन उनकी शिक्षा की दिशा में रही । वे माध्यमिक शिक्षा परिषद् की मान्यता समिति के अध्यक्ष भी रहे । इसके अतिरिक्त वे कई एक विद्यालयों से भी सम्बद्ध रहे जिसमें मुख्यत: साहू गोपीनाथ तथा साहू राम स्वरूप कन्या महाविद्यालय, मोरगंज, राजेन्द्र प्रसाद डिग्री कालेज, विष्णु इन्टर कालेज, विष्णु बाल सदन आदि शिक्षण संस्थाओं से सम्बद्ध रहे । आज वह दीप और वह प्रकाश हम लोगों के बीच में नहीं रहा, लेकिन उनका यह ज्ञान-दीप हम लोगों का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा । मान्यवर, मैं अपनी और अपने दल की संवेदनायें आपके माध्यम से शोक-संतप्त परिवार के पास पहुंचाने का अनुरोध करता हूं ।

श्री राजेन्द्र सिंह—

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री जगदीश शरण अग्रवाल के निधन पर माननीय मुख्य मन्त्री जी ने जो भाव व्यक्त किये हैं, उनसे मैं और मेरा दल भी अपने को सम्बद्ध करता है । श्री अग्रवाल जी से मेरा व्यक्तिगत परिचय होने का सौभाग्य मिला है । क्योंकि जिस जगह म लखनऊ में रहता हूं उसके बराबर ही अग्रवाल जी रहते थे । वैसे वे मेरे आदरणीय पिता जी के साथ भी सदस्य रहे हैं । वे कई बार चुनकर सदन में आये । उनका व्यक्तित्व भी बहुत अच्छा था । हर चीज को समझने की सूझबूझ उसमें थी, मैं समय-समय पर उनसे निर्देश भी लेता रहता था । जैसा माननीय मुख्य मन्त्री जी ने कहा श्री अग्रवाल जी का सम्बन्ध राजनीति के अलावा शिक्षा संस्थाओं से भी रहा । वे रिकग्निशन कमेटी के चेयरमैन थे । उस समय उनका जो व्यक्तित्व था वह विशाल था और उन्होंने दलगत राजनीति को अपना माध्यम नहीं बनाया । उनके निधन से निश्चित रूप से हमने एक अच्छा समाजसेवी, राजनीतिक सूझबूझ का व्यक्ति, एक अच्छा शिक्षा का प्रेमी खो दिया है । मान्यवर, आपसे अनुरोध है कि आप मेरी तथा मेरे दल की यह संवेदनायें शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री सूबेदार सिंह—

मान्यवर, मैं माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल द्वारा व्यक्त भावनाओं के साथ अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, माननीय जगदीश शरण अग्रवाल के साथ मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध कई वर्षों तक रहा और उनसे जो प्रेरणायें तथा आदर्श हमको मिले वह हमारे जीवन में एक दिशा-दर्शन करायगा । मान्यवर, अगर हम देखें तो ऐसे व्यक्ति बहुत कम होते हैं । माननीय जगदीश शरण अग्रवाल केवल राजनीतिक ही नहीं थे बल्कि वे सच्चे मायनों में एक मानव भी थे । वे मानव की कराह भी समझते थे उनकी

[श्री सूबेदार सिंह--]

पीड़ा को भी समझते थे और उसको दूर करने का हमेशा प्रयास करते थे। एक राजनीतिज्ञ के रूप में वे इस प्रदेश में विधान परिषद् के सदस्य कई वर्षों तक रहे और विधान सभा के सदस्य भी रहे और उन्हें सदन का अध्यक्ष बनने का भी मौका मिला और उन्होंने अपने समय में जो मान्यताएं प्राप्त की हैं वे केवल हमारे लिये ही नहीं, केवल इस सदन के लिये ही नहीं दूसरे सदनों की दिशा दर्शन भी करती रहेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है उनका संबंध तमाम शिक्षा संस्थाओं से रहा। वह सच्चे माने में एक शिक्षाविद् थे। उनके दिल में यह भावना थी कि इस देश से अशिक्षा दूर हो, सच्चे माने में शिक्षा का विकास और प्रसार हो और उनके द्वारा तैयार की गयी हजारों शिक्षा संस्थायें इस प्रदेश की सेवा कर रही हैं। मैं तो समझता हूं कि उनका पार्थिव शरीर इस जगत में नहीं है लेकिन उनके कृत्य हमेशा जीवित रहेंगे और सम्मान प्राप्त करेंगे। मैं अपने और अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि हमारी भावनाओं को उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करेंगे।

*श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त--

मान्यवर, माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा नेता कांग्रेस अर्स के द्वारा जो भाव स्वर्गीय श्री जगदीश शरण अग्रवाल जी के प्रति व्यक्त किये गये हैं, उनसे मैं अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, श्री अग्रवाल जी हमारे बीच में नहीं हैं, बहुत दिनों तक सामाजिक क्षेत्र में अपनी आभा बिखाते हुए वह विलीन हो गये। एक सामाजिक कार्यकर्त्ता के लिए जो आवश्यक बाते हैं वह हमारे लिये छोड़ गये हैं, जिनका हम अनुकरण करेंगे। जब वह अध्यक्ष पीठ पर विराजमान हुए तो किसी दूसरे दल के सदस्य थे और फिर सरकार बदल गयी लेकिन अध्यक्ष पीठ से जो व्यवस्थायें उनके द्वारा दी गयीं वह बहुत दिनों तक संसदीय क्षेत्र में मार्गदर्शन के रूप में हमारे सामने रहेंगी। मान्यवर, शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्होंने नया कीर्तिमान स्थापित किया। बहुत बार सार्वजनिक कार्य के लिए उनसे मुझे मिलने का सौभाग्य मिला। उनकी इच्छा रहती थी कि गांव-गांव में विद्यालय खुल जायं। बड़ी रुचि के साथ वह, किसी विद्यालय के प्रधानाचार्य और प्रबन्धक जब उनके पास आते थे, मिलते थे तो उनकी इच्छा रहती थी कि पिछड़े क्षेत्रों में, निजी क्षेत्रों में विद्यालय खुलें और इसी दृष्टि से शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान रहा है। इन शब्दों के साथ में अपने और अपने दल की ओर से इस अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि जो मेरी और मेरे दल की भावनाएं हैं वह उनके शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री भीखालाल--

अध्यक्ष जी, माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य नेताओं ने जो विचार स्वर्गीय जगदीश शरण अग्रवाल जी के सम्बन्ध में व्यक्त किये हैं, उनसे मैं अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, श्री अग्रवाल जी के साथ काफी आर्से तक काम करने का अवसर मुझे मिला और कोई भी व्यक्ति जो उनके सम्पर्क में आता था उनके स्वभाव और मृदु वाणी की सराहना करता था। आज हमारे बीच से एक राजनीतिज्ञ कार्यकर्त्ता और समाजसेवी उठ गया है। मैं श्री अग्रवाल के प्रति अपनी और अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि मेरे दल की भावना को उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

*श्री रियासत हुसैन--

श्रीमन्, मैं अपने और अपने दल जनता पार्टी की ओर से जो भावनाएं माननीय नेता सदन और दूसरे नेताओं न स्वर्गीय श्री जगदीश शरण अग्रवाल जी के प्रति व्यक्त की है, उनसे सम्बद्ध करता हूं। श्रीमन्, मैं यह महसूस करता हूं कि स्वर्गीय जगदीश शरण अग्रवाल जी ने विशेष रूप से शिक्षा और व्यापारी वर्ग के लिये सेल्सटैक्स कमेटी के मेम्बर होने के नाते सेवा की है, वह सराहनीय है। इसके साथ ही इस प्रदेश में शकर और खांडसारी इंडस्ट्रीज को उन्होंने बहुत आगे बढ़ाया और उन्हीं के नेतृत्व में और उनके द्वारा दिखाये हुए रास्ते पर आज इस प्रदेश के अन्दर खांडसारी इंडस्ट्री बहुत बड़े पैमाने पर स्थापित हुई हैं। इन लोगों के ऊपर विशेष तौर पर माननीय जगदीश शरण अग्रवाल की छवि थी और उनकी इमेज, उनका मार्गदर्शन वह हमेशा यादगार की शक्ल म रखेंगे। इस माननीय सदन में भी उन्होंने इस तरह की व्यवस्थाएं दीं, जो आने वाले समय और इस वक्त के इतिहास में एक मिसाल के तौर पर बन गई हैं। इस सदन की कार्यवाही में भी उनका नाम अमर रहेगा। मैं यही अपने विचार व्यक्त करके आपसे पुनः एक बार प्रार्थना करता हूं कि आप मेरी और मेरी पार्टी की ओर से उस दुखित परिवार को हमारी हमदर्दियां पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री प्रदीप कुमार यादव--

मान्यवर, माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल और अन्य दलों के नेताओं ने जो विचार स्वर्गीय जगदीश शरण अग्रवाल के सम्बन्ध में प्रकट किये हैं, उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। श्री अग्रवाल सन् 1937 में वकालत पास करके सार्वजनिक क्षेत्र में आये और उसके बाद उन्होंने राजनीति में अच्छे पैमाने पर दिलचस्पी ली। साथ ही साथ वकालत क्षेत्र में उनका एक प्रमुख स्थान बन गया है। सन् 55 से लेकर सन् 69 तक हमारे माननीय सदन की सेवा की और सन् 67 में उन्हें इस सदन ने अध्यक्ष पद पर सुशोभित किया। उस रूप में भी उन्होंने इस माननीय सदन को बहुत सी देन दी हैं, जो माननीय सदस्य उस समय रहे हैं, वह उन्हें बखूबी जानते होंगे। इसके अतिरिक्त सन् 1975 व 76 में वह इस माननीय सदन में स्वायत्त शासन मन्त्री भी रह चुके हैं। उस रूप में भी उनका कार्य सराहनीय रहा है। आज वह हमारे बीच में नहीं है, मैं उनके प्रति अपने और अपनी दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। साथ ही मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मेरे दल की समवेदना को उनके घर तक पहुंचा देने का कष्ट करें।

*श्री राम आसरे वर्मा--

स्वर्गीय जगदीश शरण अग्रवाल के बारे में जो उद्गार नेता सदन, नेता विरोधी दल और अन्य नेताओं ने व्यक्त किये हैं, उनसे मैं अपने को और अपने साथियों को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, शिक्षा और सामाजिक जगत में उनका योगदान अविस्मरणीय रहेगा। पिछली बार कई समितियों में उनके साथ बैठने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ। मैंने पाया कि उनका सरल और सबल व्यक्तित्व सभी के हृदयों पर एक ऐसी छाप छोड़ जाता है कि जिसे कोई मिटा नहीं सकता है। ऐसी प्रतिभा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मैं आपसे आग्रह करूंगा

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

*[श्री राम आसरे वर्मा—]

कि आप हमारे श्रद्धांजलि पुष्प को उनके परिवार जनों और इष्टजनों तक पहुंचाने की कृपा करें ।

श्री अध्यक्ष—

माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य माननीय नेताओं द्वारा जो विचार जगदीश शरण जी के लिए व्यक्त किये गये हैं, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । माननीय जगदीश शरण जी के साथ में रहकर मुझे उपाध्यक्ष की हैसियत से कार्य करने का अवसर मिला था । मैं दूसरे दल का था और वह दूसरे दल के थे । मैं जब कभी किसी कठिनाई में पड़ता था या कोई जानकारी उनसे प्राप्त करना चाहता था तो जिस निष्पक्ष भाव से और जिस प्रेम और सौम्यता से उसका उत्तर देते थे, उसकी छाप मेरे मस्तिष्क पर पड़ती थी और जितनी बार मैं उनसे मिलता था मुझे उनका उतना ही सहयोग मिलता था । संयोग से वह मेरे निकट ही लखनऊ में रहते थे और मेरा उनसे पहले से ही व्यक्तिगत सम्पर्क था । मुझे उनके निधन का दुख है और यह जो सभी माननीय सदस्यों ने अपने उद्गार व्यक्त किए है, उससे मैं उनके परिवार को अवगत करा दूंगा और उनकी भावनाओं को पहुंचा दूंगा । अब हम दो मिनट मौन खड़े होकर श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे ।

(सभी सदस्य दो मिनट के लिये अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुए ।)

विधान सभा सदस्य, श्री ब्रजवल्लभ के निधन पर शोकोद्गार

*मुख्य मन्त्री (श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह)—

माननीय अध्यक्ष जी, मौत कभी भीतर से आती है कभी बाहर से आती है । भीतर से जब आती है तो मस्तिष्क धीरे-धीरे उसको मानने लगता है लेकिन जब बाहर से मौत आती है तो न मन मानता है न दिमाग मानता है । ब्रज बल्लभ जी की मौत बाहर से आई इसलिए उसको मानने का दिल नहीं करता । एक असामाजिक तत्व की गोली के वह शिकार हो गये । मुझे सूचना उनके घायल होने की मुरादाबाद में मिली थी । उसी समय सीधे मैं वहां पहुंचा, वह अस्पताल में थे, आक्सीजन लगा हुआ था, परिवार के लोग उनके वहां मौजूद थे । हर सांस उनकी जो वह ले रहे थे, मौत से लड़ रहे थे या जिन्दगी से लड़ रहे थे, कहा नहीं जा सकता, लेकिन उनकी सांस में जो असामाजिक तत्व के मुकाबले का प्रश्न था जिसे वह अन्तिम सांस तक छोड़ गए उसी प्रश्न के साक्ष्य में हम लोगों को अपना जन-जीवन निर्धारित करना होगा कि इसका मुकाबला हम कैसे करते हैं । वह सदन में सन् 1977 और फिर इस सदन में सन् 1980 में आये । उनके जाने से एक बड़े समाज सेवी का निधन हुआ है । हम लोगों के बीच से वह उठ गये हैं लेकिन हम लोगों के सामने जो प्रश्न चिन्ह छोड़ गये हैं वह हम लोगों पर भार है । उसका सही उत्तर हम लोगों को ढूंढ़ना होगा । मान्यवर, शोक संतप्त परिवार तक हम लोगों की भावनाओं को पहुंचाने का मैं अनुरोध करता हूं ।

श्री राजेन्द्र सिंह—

इस सदन का चिंतित और क्षुब्ध होना आवश्यक है । जो भाव माननीय मुख्य मन्त्री जी ने व्यक्त किए हैं, मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं । श्रीमन्

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

ब्रज बल्लभ जी सदन की कार्यवाही के बाद अपने घर वापस जा रहे थे कि रास्ते में उनका निधन हुआ एक गोली से असामाजिक तत्व द्वारा। यह और भी गहरी चिन्ता का विषय हो गया है। यह कोई मुद्दा राजनीति में पार्टीबाजी का नहीं होना चाहिये। पिछले दिनों जिस तरह से इस प्रदेश में राजनीतिक हत्यायें हो रही हैं, मैंने बहुत कोशिश की समझने की लेकिन ऐसी कोई मिशाल नहीं मिली कि कोई एम0 एल0 ए0 अपने घर वापस जा रहा हो और इस तरह से असामाजिक तत्वों द्वारा उसकी हत्या कर दी जाय। यह बहुत बड़ा चिन्ता का विषय है। इस तरह से कोई भी व्यक्ति सुरक्षा महसूस नहीं कर रहा है जब सत्ता पक्ष का सदस्य ही इस तरह से मार दिया जाय।

मैं फिर मुख्य मन्त्री जी का ध्यान इस तरफ आकर्षित करना चाहूंगा कि उनका निधन समय से पूर्व हो गया है जो चिन्ता का विषय है क्योंकि जिस तरह से उनकी हत्या हुई है उससे हम सभी का मन क्षोभ से भरा हुआ है। मैं उनके शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संमवेदना व्यक्त करता हूं। अपने दल तथा अपनी ओर से मैं निवेदन करूंगा कि हमारी समवेदना को अध्यक्ष महोदय उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करेंगे।

श्री सूबेदार सिंह—

अध्यक्ष महोदय, ब्रज बल्लभ जी की हत्या के सम्बन्ध में जो भाव इस सदन में व्यक्त किये गये हैं मैं तथा मेरा दल उनसे सहमति व्यक्त करता है। निश्चित रूप से ब्रज बल्लभ जी की हत्या हम लोगों के लिए ही नहीं बल्कि सरकार के लिए भी चिन्ता का विषय है। मैं तो यह समझता हूं कि यह सदन और सरकार मिल कर इस समस्या पर विचार करे और ऐसी व्यवस्था करे ताकि इस तरह के हत्याकांडों में भाग लेने वाले लोगों को कठोर से कठोर सजा दी जा सके ताकि इस तरह की घटना भविष्य में न होने पाये तभी सच्चे माने में हम उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित कर सकेंगे। अन्त में मैं अध्यक्ष महोदय से अनुरोध करूंगा कि शोक संतप्त परिवार तक वह मेरी तथा मेरे दल की ओर से संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त—

अध्यक्ष महोदय, माननीय ब्रज बल्लभ जी के निधन के सम्बन्ध में जो उद्गार नेता सदन और नेता विरोधी दल और नेता कांग्रेस अर्स की ओर से व्यक्त किये गये हैं, मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करता हूं। जिन परिस्थितियों तथा जिस ढंग से श्री ब्रज बल्लभ जी हमारे बीच से उठे हैं, स्वाभाविक है कि वह चिन्ता का विषय है।

इस मौके पर मैं एक बात कहना चाहूंगा कि उनकी इस तरह से हत्या वर्तमान प्रशासन के लिए सबसे बड़ा कलंक है कि राजनीतिक क्षेत्र में काम करने वाले लोगों एवं जन-प्रतिनिधियों की भी सुरक्षा अगर इस शासन में न हो तो शान्ति और व्यवस्था की इससे ज्यादा बिगड़ी हुई हालत और क्या हो सकती है? मैं एक बात और कहना चाहूंगा कि अपराध अनुसंधान शाखा द्वारा जो जांच हो रही है, उसकी क्या रिपोर्ट आयी है, अपराधी पकड़ा गया या नहीं इस बारे में तो मेरी कोई जानकारी नहीं है लेकिन शासन को चाहिये कि इस बारे में पूरी बात का पता लगा कर इस सदन को किसी मौके पर अवगत कराने की कृपा करें। इन शब्दों के साथ मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और अनुरोध करता हूं

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त—]

कि मेरी तथा मेरे दल की ओर से शोक संतप्त परिवार तक हमारी समवेदना पहुंचाने की अध्यक्ष महोदय कृपा करेंगे ।

*श्री भीखा लाल—

अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय ब्रज बल्लभ जी के सम्बन्ध में जो विचार यहां आदरणीय सदन में व्यक्त किये गये हैं उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, जिन परिस्थितियों और जिस तरीके से श्री ब्रज बल्लभ बाबू जी का निधन हुआ वह वास्तव में एक क्षोभ और दुख का विषय है जिस पर शासन और हम सबको सोचना है । इन शब्दों के साथ मैं श्री ब्रज बल्लभ बाबू जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि आप मेरी और हमारे दल की ओर से ये भावनायें उनके संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री रियासत हुसैन—

मान्यवर, श्री ब्रज बल्लभ बाबू जी का निधन जिन परिस्थितियों, जिन हाल में हुआ, और उसके सम्बन्ध में नेता सदन, नेता विरोधी दल और अन्य दलों के नेताओं ने जो विचार व्यक्त किए उनसे मैं अपने को और अपनी पार्टी को सम्बद्ध करता हूं लेकिन एक बात की ओर अवश्य ध्यान दिलाना चाहता हूं कि स्वर्गीय ब्रज बल्लभ जी मरने के बाद भी हमारे और आप सबके लिए एक चुनौती छोड़ गए हैं कि एक जिले के अन्दर 3 विधायकों, श्री त्रिवेणी, श्री शिवराज सिंह और श्री ब्रज बल्लभ जी की हत्या हुई । श्री ब्रज बल्लभ जी सदन की कार्यवाही में भाग लेने के बाद वापस जा रहे थे । इस सदन में जब हम चर्चा करते हैं तो किसी के पक्ष में, किसी के विपक्ष में और किसी का यहां समर्थन होता है, हर तरह की यहां पर चर्चा होती है । तो यह चुनौती हम सब के लिए है और हम सब उससे बंधे हुए हैं । सदन में हम हिम्मत और निर्भीकता से सच्चाई रखते हैं, यह सब का अधिकार है और उसका इस्तेमाल करते हैं परन्तु जब इस प्रकार की घटना होती है तो यह हमारे तथा नेता सदन के लिए वे मरने के बाद एक चुनौती छोड़ गये हैं । हमें सोचना है कि उस चुनौती को कैसे हल करें, कैसे मुकाबला करें ।

इन शब्दों के साथ मेरा आपसे अनुरोध है कि आप मेरी और मेरे दल की ओर से हमदर्दी के ये शब्द उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचा दें ।

*श्री प्रदीप कुमार यादव—

मान्यवर, माननीय ब्रज बल्लभ बाबू के निधन के सम्बन्ध में नेता सदन, नेता विरोधी दल और दूसरे दल के नेताओं ने जो विचार प्रकट किये हैं, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं ।

सन् 1977 में जब वे चुन कर यहां आये तब उनसे मेरा सम्पर्क हुआ । वे बड़े ही उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और बहुत दुःख के साथ कहना पड़ता है कि जब वे माननीय सदन को अटैन्ड करके जा रहे थे तो उन्हें गोली का निशाना बनाया गया । बड़े अफसोस की बात है कि वे आज हमारे बीच में नहीं हैं, कच्ची उमर में ही चले गये ।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

मैं अपनी ओर से तथा अपने दल की ओर से स्वर्गीय ब्रज बल्लभ जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि आप हमारी संवेदनाएं उनके शोक संतप्त परिवार को पहुंचाने की कृपा करें ।

*श्री राम आसरे वर्मा—

मान्यवर, स्वर्गीय ब्रज बल्लभ बाबू के प्रति जो उद्गार माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल और अन्य दलों के नेताओं ने व्यक्त किये हैं, उनसे मैं अपने और अपने दल के साथियों को सम्बद्ध करता हूं और यह कहना चाहता हूं कि जब श्री ब्रज बल्लभ जी 1977 में एक निर्दलीय विधायक के रूप में चुन कर आये थ और हमारे साथ पिछली विधान सभा में बराबर बठते रहे, उनसे उनके स्वभाव और कार्य-कलापों से पूरी तरह से जानकारी भी मिलती रही । उदारता की वे ऐसी प्रतिमूर्ति थे जिससे इस सदन में कांग्रेस पक्ष की मान्यता प्राप्त विरोधी दल के रूप में आना चाहता था । उस समय एक सदस्य की कमी पड़ रही थी । तो माननीय तिवारी जी ने आग्रह किया और उन्होंने अपनी उदारता का परिचय देते हुए कांग्रेस में शामिल हो गये थे । इस बार वे कांग्रेस टिकट पर जीत कर आये । उनका कमरा मेरे कमरे के नजदीक था और सुबह और शाम दोनों समय हमारी विभिन्न मसलों पर बातें होती थीं । दुःख और भी इसलिए है कि जिस दिन वे यहां से घर जाने को थे तो लगभग एक घंटा बैठकर उनसे मेरी बात होती रही । नहीं पता था कि यहां से जाने के बाद वे अपन घर ही नहीं पहुंच पायेंगे और रास्ते में ही गोली का शिकार हो जायेंगे । वे चले गये, लेकिन जैसा कि अन्य माननीय नेताओं ने कहा है वे एक चुनौती छोड़ गये हैं और आज हम सभी को मिलकर इस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए ।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहूंगा कि जिन जुल्मियों ने उनकी हत्या की थी, मुझे जिस तरह की सूचना उनके परिवार वालों ने दी है, वे अभी तक पकड़े नहीं गये हैं और उनके परिवार के लोग भी असुरक्षा की भावना महसूस कर रहे ह । इन शब्दों के साथ मैं स्वर्गीय ब्रज बल्लभ जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपसे निवेदन करूंगा कि आप हमारी समवेदनायें उनके दुखित परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री अध्यक्ष—

माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य माननीय नेताओं ने जो अपने विचार व्यक्त किये हैं, उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । स्वर्गीय श्री ब्रज बल्लभ जी एक प्रमुख राजनैतिक कार्यकर्त्ता और स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख सेनानी थे । जिस प्रकार से उनकी मृत्यु हुई, जैसा कि माननीय नेता सदन तथा अन्य माननीय नेताओं ने कहा, हम सभी उन व्यक्तियों के लिए, जो राजनैतिक और सामाजिक कार्यों में संलग्न हैं चाहे वे यहां किसी दल के नेता के रूप म हों या माननीय सदस्य के रूप में हों या बाहर हों, सभी के लिए एक बड़ा प्रश्न है विचार करने के लिए। यदि इस तरह से हम आपसी द्वेष में अपनी सौजन्यता और सभ्यता को खोते चले जायेंगे और हिंसा बलवती होती जायेगी, हम मानवता की श्रेणी से दूर चले जायगे तो फिर किसी का कार्य करना मुश्किल हो जायेगा । यह एक ऐसा प्रश्न ह जिसमें प्रत्येक राजनैतिक दल और प्रत्येक व्यक्ति के सहयोग की आवश्यकता है । उनके निधन पर हमारा शोक प्रस्ताव तभी मूल्यवान हो सकता है जब हम इस दिशा में कम से कम आज से ही सोचें और उसके निराकरण के लिए आज से ही उपाय करें । मैं आप सभी नेताओं की

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[श्री अध्यक्ष—]

समवेदना और अभिव्यक्ति उनके दुखित परिवार तक भेजा दूंगा। मैं आपसे निवेदन करूंगा कि हम दो मिनट मौन खड़े होकर दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें।

(सभी सदस्य 2 मिनट के लिए अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुए)

भूतपूर्व सदस्य, श्री राम आसरे वर्मा, श्री मुमताज मोहम्मद खां, श्री परशुराम राय तथा श्रीमती तारा अग्रवाल के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मन्त्री (श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह)—

माननीय अध्यक्ष जी, मौत हम लोगों को भले न छुये, लेकिन हम लोगों की जिन्दगी को बदल देती है, जबकि हमारे कुछ साथियों को मौत उठा लेती है और ऐसे हमारे 4 और साथी इसी तीन माह में हम लोगों के बीच में नहीं रहे। मौत ने उनको अपने अगम्य अन्तराल में समेट लिया। उनमें से श्री राम आसरे वर्मा 72 वर्ष की आयु में हम लोगों से विदा हो गये। वह 1956, 1962 और 1967 में विधान सभा के सदस्य थे और 1942 के आन्दोलन में वे जेल गये थे। श्री मुमताज मोहम्मद खां साहब 1969 और 1974 में इस सदन के सदस्य रहे। वह सरकार में मंत्री भी रहे। उनके साथ मुझे भी इस सदन में रहने का एक अवसर मिला। इतने कार्य प्रिय, मृदु तथा अपने समाज की एकता की भावनाओं को लेकर एक सेकुलर भावना से काम करने वाले शायद ही और व्यक्ति मिलें। जिस मर्यादा की उन्होंने स्थापना की है, श्री परसुराम राय जी उस शताब्दी के एक कीर्तिमान थे। 1883 में उनका जन्म हुआ था और उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की अपनी युद्ध नौकरी आर्थिक संघर्षों से करते हुए वह फिर राजनीति में गये। 1921 में वे जेल गये। फिर 1929, 1932, 1942 में जेल गये और जवाहर लाल नेहरू जी, गोविन्द बल्लभ पन्त जी तथा टण्डन जी के बहुत ही प्रिय रहे। नेहरू जी तो उनके घर भी गये थे। श्रीमती तारा अग्रवाल का निधन 22 दिसम्बर, 1980 को हुआ। 1962 में वह इस सदन में चुनकर आयी थीं। पर्दा प्रथा का उन्होंने पर्दाफाश किया था। 1942 में उन्होंने आन्दोलन में भाग लिया और चन्द्र शेखर आजाद, फिरोज गांधी और केशवदेव मालवीय जैसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को शरण दिया, जिसकी वजह से उन्हें जेल भी जाना पड़ा। मान्यवर, मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए आपके माध्यम द्वारा संतप्त परिवारों को अपनी समवेदनाओं को भेजने की प्रार्थना करता हूं।

श्री राजेन्द्र सिंह—

माननीय अध्यक्ष जी, स्वर्गीय श्री राम आसरे वर्मा, श्री मुमताज मोहम्मद खां, श्री परसुराम राय एवं श्रीमती तारा अग्रवाल के निधन के संबंध में जो भाव और जिस तरह से भावभीनी श्रद्धांजलि माननीय मुख्य मन्त्री जी ने दिया है, मैं और मेरा दल भी अपने आपको उन भावों से सम्बद्ध करता है। श्रीमन्, ये स्वतंत्रता सेनानी और वह पीढ़ी, जिन्होंने कि हम लोगों को यहां इस तरह से इस स्वतंत्र देश के सदन में बैठने के लिए रास्ता दिखाया, वह धीरे-धीरे हमारे बीच से उठती चली जा रही है। श्रीमन्, उन व्यक्तियों की, उन महानुभावों की अलग परिपाटी थी। उन्होंने देश के लिए सब कुछ सहा था। यह यहां इस सदन का सदस्य होना उनके लिए बड़ी चीज नहीं थी। उससे ज्यादा कुरबानियां उन्होंने अपने जीवन के प्रति की हैं। श्रीमन्, ऐसे महान व्यक्तियों के प्रति, उन्होंने इस

देश को आजाद करने में अपने आपको न्योछावर किया अपने आपको लगाया, मैं और मेरा दल श्रद्धा के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप हमारी भावनाओं को उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री सूबेदार सिंह--

माननीय अध्यक्ष महोदय--

'असमिन परिवर्तन संसारे मृतः कोवा न जायते,

स जाते येन जालेन, जाति वंश समुन्यतया।'

सर्वश्री राम आसरे वर्मा, मुमताज मोहम्मद खां, परशुराम राय तथा श्रीमती तारा अग्रवाल के निधन के बारे में जो संवेदनायें माननीय मुख्य मन्त्री जी, माननीय नेता विरोधी दल ने व्यक्त की हैं, मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं।

मान्यवर, माननीय राम आसरे वर्मा और श्रीमती तारा अग्रवाल के साथ काम करने का पर्याप्त अवसर मुझको मिला है। ये हमारे देश के बहुत ही जाने-माने नागरिक थे और इन्होंने देश की जो सेवा की है वह बहुत ही बहुमूल्य है और हमको हमेशा याद रहेगी। इस तरह से हमारे समाज का मार्गदर्शन करते रहे हैं। मैं इन नेताओं के द्वारा जो समाज की सेवा की गई है, उसकी प्रशंसा करता हूं और इस अवसर पर उनके निधन के प्रति अपनी और अपने दल की ओर से संवेदना व्यक्त करता हूं और साथ ही साथ मान्यवर, आपसे अनुरोध करता हूं कि आप कृपया हमारी समवेदनाओं को उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री राजेन्द्र कुमार गुप्त--

मान्यवर, अभी स्वर्गीय राम आसरे वर्मा, स्वर्गीय श्री मुमताज मोहम्मद खां, परशुराम राय और श्रीमती तारा अग्रवाल के निधन के प्रति जो उद्गार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और नेता कांग्रेस (अर्स) की ओर से व्यक्त किये गये हैं, उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, ये सभी महानुभाव उस पीढ़ी के सामाजिक कार्यकर्त्ता थे जिस समय के राजनतिक क्षेत्र में बहुत बड़ा कांटा का ताज समझा जाता था। किन्तु उस समय भी, मान्यवर, इन लोगों ने अत्यन्त साहस और लगन के साथ समाज की सेवा की और उसमें रुचि ली। उनका यह कार्य हमारे इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा।

मान्यवर, आज यह बड़े दुख की बात है कि ऐसी पुरानी पीढ़ी के लोग जिनसे हम लोगों को बहुत दिनों तक प्रेरणा लेने की आवश्यकता है, वह धीरे-धीरे हमारे बीच से उठते जा रहे हैं। मान्यवर, मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उन सभी मृत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे अनुरोध करता हूं कि मेरी इन भावनाओं को इनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री भीखालाल--

अध्यक्ष जी, स्वर्गीय श्री राम आसरे वर्मा, श्री मुमताज मोहम्मद खां, श्री परसुराम राय तथा श्रीमती तारा अग्रवाल के निधन के संबंध में जो भाव और

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री भीखा लाल--]

विचार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और अन्य नेताओं ने व्यक्त किये हैं, मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और इन दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और, मान्यवर, आपसे अनुरोध करता हूं कि मेरी इन भावनाओं को उनके शोक-संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री रियासत हुसैन--

श्रीमन्, स्वर्गीय श्री राम आसरे वर्मा, श्री मुमताज मोहम्मद खां, श्री परशुराम राय तथा श्रीमती तारा अग्रवाल जिनके संबंध में माननीय नेता सदन और माननीय नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के नेताओं ने अपने विचार व्यक्त किये हैं, उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं।

श्रीमन्, श्री मुमताज मोहम्मद खां, मेरे करीबी दोस्त थे और सन् 62 में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर चुन कर आये थे। उनके इंतकाल के दो दिन पहले ही मैं उनको देखने गया था। जबकि मेडिकल इंस्टीट्यूट ने उनको ला-इलाज घोषित कर दिया था, तो वे वेस्टर्न कोर्ट दिल्ली में थे। मैं उनके पास गया तो बातचीत कर रहा था। लेकिन जब मैंने उनसे पूछा तो उनके लड़के ने कहा कि डाक्टरों ने कहा है कि हमने इंजेक्शन वगैरह लगा दिये हैं और अब एक महीने बाद दिखलाना। मैंने पूछा कि अगर एक महीने के बीच में हालत खराब हुयी तो ? तब उसने कहा कि डाक्टरों ने इमरजेन्सी के लिए कह दिया है। लेकिन उनकी बातचीत के मालूम हुआ कि उनको ला-इलाज कर दिया गया था। लेकिन एक चीज जो विशेष बात मेरे सामने आयी, वह यह थी कि उस वक्त भी वह बोल रहे थे, उनकी शिकायत यह थी कि उन्हें नींद नहीं आती। उस वक्त भी उन्होंने मुझसे बहुत कुछ मुरादाबाद के बारे में पूछना चाहा लेकिन मैंने यह कह कर टाल दिया कि आपकी तबियत ठीक नहीं है। आप इन चीजों से अलग रहें। उस वक्त भी उनको इस बात की चिन्ता थी कि समाज के अन्दर क्या हो रहा है। रात को 9 बजे मैं आया और 2 दिन बाद ही अखबार में पढ़ा कि उनकी मृत्यु हो गई। उनके देहान्त से मुझे बहुत दुख है। मैं चाहूंगा कि मेरी व मेरे दल की तरफ से इन शोक संतप्त परिवारों तक श्रद्धांजलि पहुंचाने की कृपा करें।

*श्री प्रदीप कुमार यादव--

मान्यवर, जो विचार माननीय नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के नेताओं ने व्यक्त किये हैं दिवंगत आत्माओं के प्रति--श्री राम आसरे वर्मा, श्री मुमताज मोहम्मद खां, श्री परशुराम राय व श्रीमती तारा देवी अग्रवाल के बारे में, मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, श्री राम आसरे वर्मा हमारे जनपद बाराबंकी के निवासी थे। वह मेरे बड़े घनिष्ठ थे। सबसे पहले इनके भाई लल्ला वर्मा माननीय सदन के सदस्य रहे। आततायियों ने इनके भाई के ऊपर कातिलाना हमला किया और वह मर गये। उसके बाद सन् 1956 में बाई-इलेक्शन हुआ और उस बाई-इलेक्शन के द्वारा श्री राम आसरे वर्मा सोशलिस्ट पार्टी के टिकट पर चुनकर आये। इसके बाद दुबारा सन् 67 और 72 में भी यह सोशलिस्ट पार्टी के ही टिकट पर चुन कर आये। सन् 74 के बाद वह कांग्रेस में शामिल हो गये। उन्होंने उस जंगे आजादी की लड़ाई में हिस्सा लिया। जब उनके भाई सन् 42 में फरारी की हालत में थे उस समय

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री राम आसरे वर्मा जी को जो यातनायें दी गयीं वह बयान करना मुश्किल है। उनके नाखूनों में खपच्चियां ठोकी गईं किन्तु उन्होंने कभी भी नहीं बताया कि उनके भाई लल्ला जी कहाँ हैं। इसलिए इन्हें सन् 42 में जेल जाना पड़ा। आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। उनके प्रति और साथ ही साथ जो अन्य दिवंगत आत्मायें हैं उनके प्रति अपनी और अपने दल की तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि शोक सन्तप्त परिवार तक मेरी समवेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

*श्री राम आसरे वर्मा--

मान्यवर, स्वर्गीय श्री राम आसरे वर्मा, श्री मुमताज मोहम्मद खां, श्री परशुराम राय व श्रीमती तारा अग्रवाल के बारे में जो उद्गार माननीय नेता सदन माननीय नेता विरोधी दल व अन्य दलों के नेताओं ने व्यक्त किये हैं, उससे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं और हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं मैं आपसे आग्रह करता हूं कि मेरी श्रद्धांजलि शोक सन्तप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष--

स्वर्गीय श्री राम आसरे वर्मा, श्री मुमताज मोहम्मद खां, श्री परशुराम राय व श्रीमती तारा अग्रवाल के निधन के सम्बन्ध में जो अभिव्यक्ति नेता सदन, नेता विरोधी दल तथा अन्य दलों के नेताओं द्वारा की गई है, मैं उससे अपने को सम्बद्ध करता हूं। श्री राम आसरे वर्मा, श्री मुमताज मोहम्मद खां तथा श्रीमती तारा अग्रवाल के साथ मुझे इस सदन में कार्य करने का अवसर मिला है।

इन सबकी कार्य क्षमता, उनकी देश के प्रति भावना, इन सबका स्तर बहुत ऊंचा था। मैं आप सभी के साथ अपने को सम्बद्ध करते हुए तथा आपकी आकांक्षाओं के अनुरूप उन सभी के परिवार के सदस्यों को आपकी भावनायें भेज दूंगा। कृपया दो मिनट मौन खड़े होकर दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करें।

(सभी सदस्य 2 मिनट के लिए अपने-अपने स्थान पर मौन खड़े हुए।)

आज की शेष कार्यवाही का स्थगन

मुख्य मन्त्री (श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह)--

मान्यवर, श्री जगदीश शरण अग्रवाल जी, जो इस सदन के भूतपूर्व अध्यक्ष थे, की स्मृति में आगे की कार्यवाही स्थगित कर दें।

श्री अध्यक्ष--

आज की कार्यवाही स्थगित करते हुए अब हम उठते हैं और कल 11 बजे फिर बैठेंगे।

(इसके बाद सदन 1 बज कर 37 मिनट पर अगले दिन के 11 बजे तक के लिए स्थगित हो गया।)

सत्य प्रिय सिंह,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ:
27 जनवरी, 1981

विधान सभा सचिवालय, उत्तर प्रदेश

नत्थी क

(देखिये पीछे पृष्ठ 8 पर)

माननीय सदस्यगण,

वर्ष 1981 के प्रथम सत्र के प्रारम्भ पर आपको नव वर्ष की शुभकामनायें ।

जिन परिस्थितियों में फरवरी, 1980 में राष्ट्रपति शासन लागू हुआ और जून, 1980 में मेरी सरकार ने शासन की बागडोर संभाली, उनसे आप भली-भांति अवगत हैं । पिछले 3-4 वर्षों के दौरान कानून व्यवस्था के क्षेत्र म अत्यधिक अस्थिरता, आर्थिक स्थिति में ह्रास, आवश्यक वस्तुओं के निरन्तर अभाव तथा मुद्रास्फीति से सामान्य जन-जीवन त्रस्त रहा । इससे भी अधिक दुख की बात यह थी कि उस समय के राजनीतिक खिचाव, साम्प्रदायिक तनाव तथा लोकतांत्रिक सिद्धांतों के प्रति बढ़ रही उपेक्षा से लोगों के और विशेषकर गरीबों तथा दलित वर्गों के दिलों में कुंठा और निराशा की भावना उत्पन्न हो गई थी । संकीर्ण जातीयता, जर्जर शान्ति-व्यवस्था, अनुशासनहीनता तथा बढ़ती हुई महंगाई के कारण चारों ओर अशांति और दुव्यवस्था का वातावरण फैल गया था । यह हर्ष का विषय है कि पिछले 6-7 महीनों में मेरी सरकार ने इन सभी समस्याओं का दृढ़ता से मुकाबला किया और राज्य के आर्थिक तथा सामाजिक जीवन का स्तर ऊंचा करने का भरपूर प्रयास किया है । प्रदेश के ऐतिहासिक जीवन में 6-7 मास की अवधि कोई अधिक अवधि नहीं होती, फिर भी इस थोड़े से समय में मेरी सरकार, राज्य को कुशल, स्वच्छ एवं गतिशील प्रशासन प्रदान करने में सफल रही है ।

2--मेरी सरकार, प्रदेश के नागरिकों के जीवन व उनकी सम्पत्ति की सुरक्षा के लिए कृत संकल्प है । अपराधियों और समाज विरोधी तत्वों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जा रही है । मेरी सरकार के प्रयासों से गत वर्ष बहुत बड़ी संख्या में अवैध अस्त्र बरामद किये गये । प्रदेश के कतिपय स्थानों पर हिंसा और तनाव की स्थिति उत्पन्न हुई जिसमें प्रशासन ने उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया । साम्प्रदायिक सामंजस्य को बनाये रखने के लिए शासन द्वारा विशेष उपाय किये जा रहे हैं । हरिजनों एवं समाज के दुर्बल वर्गों के हितों की रक्षा के लिए विशेष ध्यान दिया जा रहा है । पुलिस के आधुनीकरण हेतु कई योजनायें विचाराधीन हैं । इस वर्ष काफी लम्बे अन्तराल के पश्चात् परीक्षायें शांतिपूर्ण वातावरण में समय से पूर्ण हुई तथा प्रदेश की जनता ने अपने समस्त त्योहार सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में मनाये । इसके लिए मैं उन्हें बधाई देता हूं ।

3--मेरी सरकार योजना प्रणाली में मौलिक परिवर्तन करेगी ताकि जनपदों की योजनायें तथा कार्यक्रम राज्य की योजना का आधार हों और जन प्रतिनिधि इनसे अधिक से अधिक सम्बद्ध हो सकें । इस सम्बन्ध में व्यापक स्तर पर विकेन्द्रीकरण के प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन हैं । पंचवर्षीय योजना का कार्य पुनः नये सिरे से प्रारम्भ किया गया है जिसके अनुसार विकास की दर 6 प्रतिशत निर्धारित की गई है । राज्य की योजना का आकार 6200 करोड़ रुपये स्थिर किया गया है जिसमें 570 करोड़ रुपये पर्वतीय क्षेत्र हेतु शामिल हैं । वर्ष 1980-81 का परिव्यय 850 करोड़ रुपयों से बढ़ाकर 933 करोड़ 83 लाख रुपये रखने में मेरी सरकार को सफलता प्राप्त हुई है । अतिवृष्टि तथा अप्रत्याशित बाढ़ के बावजूद किसानों के पुरुषार्थ और सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप इस वर्ष खरीफ में लगभग 86 लाख मैट्रिक टन खाद्यान्न का उत्पादन हुआ और रबी में भी 146 लाख मैट्रिक टन अनाज उत्पन्न होने का अनुमान है ।

4—शासन ने प्रदेश में आई भयंकर बाढ़ का सामना बड़ी मुस्तैदी से किया। विगत वर्ष भारत सरकार से बाढ़ सहायता हेतु जो धनराशि प्राप्त हुई थी उसमें से सड़कों की मरम्मत, काम के बदले अनाज योजना, पेयजल की व्यवस्था आदि पर हुये व्यय के अतिरिक्त लगभग 36 करोड़ 25 लाख रुपयों का उपयोग राहत एवं पुनर्वासन के कार्य में किया गया। सरकार इस तथ्य से अवगत है कि यदि छोटे काश्तकारों को कृषि विकास में साझेदार नहीं बनाया गया तो हरित क्रांति गरीबों तक नहीं पहुंचेगा। प्रदेश के ग्रामीण अंचलो में किसानों को उच्चकोटि का जैविक खाद उपलब्ध कराने के उद्देश्य से गोबर गैस प्लान्ट की स्थापना का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। प्रदेश के दलहनी एवं तिलहनी फसलों के उत्पादन को बढ़ाने के प्रयास जारी रहेंगे। प्रदेश में अब तक 40 आदर्श मन्डी स्थलों का निर्माण पूरा किया जा चुका है तथा आगामी वर्ष में 17 प्रमुख मन्डी स्थलों तथा 29 उपमन्डी स्थालों का भी निर्माण किया जायेगा।

5—गांवों के आर्थिक विकास के लिए मेरी सरकार द्वारा एकीकृत ग्राम्य विकास कार्यक्रम तथा समादेश क्षेत्रीय विकास योजनाओं को सुदृढ़ किया जायेगा। सरकार सूखे की समस्या से ग्रस्त ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले छोटे काश्तकारों, विशेष रूप से अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़ी जाति के सदस्यों, के आर्थिक स्तर में सुधार हेतु कुछ विशेष क्षेत्रीय विकास योजनाओं को कार्यान्वित कर रही है। ग्रामीण निर्बल वर्ग के परिवारों के सदस्यों को रोजगार के लिए अतिरिक्त साधन उपलब्ध कराये जायेंगे। इस उद्देश्य से प्रदेश के सभी विकास खण्डों में 'ट्राइसेम' योजना चलाई जा रही है। इस योजना के अन्तर्गत ग्रामीण नवयुवकों को तीन माह का प्रशिक्षण तथा 100 रु० प्रति माह की छात्रवृत्ति देकर उन्हें लघु एवं कुटीर उद्योगों को स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

6—प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में बसने वाले निर्बल वर्ग और विशेषकर अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लोगों के हितों की रक्षा तथा उनकी आर्थिक दशा में सुधार एवं सामाजिक स्तर ऊंचा उठाने के लिए मेरी सरकार दृढ़ संकल्प है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु ग्रामीण क्षेत्र में आवासीय भवनों के निर्माण के कार्य में प्रगति लाई जा रही है। अक्टूबर, 1980 तक 11,349 भवन पूर्ण रूप से निर्मित हो चुके हैं और 14 हजार 9 सौ से ऊपर आवासीय भवन निर्माणाधीन हैं। गांवों में, विशेषकर अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों की बस्तियों में, पेय जल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से अधिकाधिक कुओं एवं डिग्गियों का निर्माण किया जा रहा है। साथ ही हैण्ड पम्प भी लगाये जा रहे हैं। अन्त्योदय कार्यक्रम के अन्तर्गत अक्टूबर, 1980 तक 1 लाख 54 हजार से अधिक परिवार लाभान्वित हो चुके हैं। मेरी सरकार द्वारा श्रम के बदले खाद्यान्न योजना को अब राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना के रूप में संचालित किया जा रहा है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में और अधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे तथा सामुदायिक लाभ की स्थायी परिसम्पत्ति सृजित होगी।

7—काश्तकारों को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराने हेतु 5 से 3 हेक्टेयर के क्षेत्रों तक राजकीय व्यय पर गूलें बनाने का प्रस्ताव है। साथ ही साथ कुछ लम्बाई तक गूलों को पक्का करने का भी प्रस्ताव है। विश्व बैंक की सहायता से ऊपरी गंगा नहर के आधुनीकरण की परियोजना भी प्रारम्भ की जायगी। छठी पंचवर्षीय योजना की संरचना में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि राजकीय सिंचाई साधनों से सृजित सिंचन क्षमता में क्षेत्रीय विषमता को शीघ्रातिशीघ्र कम किया जाये। इस वर्ष 1400 राजकीय नलकूपों के निर्माण का

प्रस्ताव है तथा समस्त राजकीय साधनों से 4 लाख 66 हजार हेक्टेयर भूमि में अतिरिक्त सिंचन क्षमता भी सृजित की जायेगी ।

8—केन्द्रीय सार्वजनिक क्षेत्र में कई बड़ी परियोजनायें, जैसे रासायनिक खाद के बड़े कारखाने, हिन्दुस्तान एरोमाटिक्स की फैक्ट्री और ऐरोमेटिक प्रोजेक्ट्स, स्थापित किये जाने के लिए सक्रिय प्रयास किये जा रहे हैं । सार्वजनिक क्षेत्र में सीमेन्ट उत्पादन बढ़ाये जाने का भी प्रयास किया जा रहा है । इसके अतिरिक्त राज्य में एक पोलिएस्टर फाइबर प्लान्ट स्थापित किये जाने का प्रस्ताव भारत सरकार के विचाराधीन है । भारी एवं मध्यम उद्योगों के विकास के साथ-साथ ग्रामीण एवं लघु उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए मेरी सरकार सतत् प्रयास कर रही है । हथकरघा उद्योग को उचित मूल्य पर सूत उपलब्ध कराने के उद्देश्य से शासन ने 10 नई कताई मिलें लगाने की योजना तैयार की है । इनमें से 5 सहकारी क्षेत्र में तथा 5 सार्वजनिक क्षेत्र में होंगी । इसके अतिरिक्त 8 वर्तमान कताई मिलों की क्षमता बढ़ाने का भी प्रस्ताव है । उद्यमियों को सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से जिला स्तर पर और अधिक सहूलियतें प्रदान की जायेंगी । उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिए मेरी सरकार द्वारा एक नई उद्योग नीति तैयार की जा रही है ।

9—प्रदेश के बुनकरों की दशा में सुधार लाने की दृष्टि से हथकरघा उद्योग की परम्परागत नीतियों में आमूल परिवर्तन किया गया है । अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के बुनकरों के लिए एक नवीन रोजगार मूलक कार्यक्रम की रूप रेखा तैयार की गई है । बुनकरों को सहकारी विपणन संस्था से सम्बद्ध कर उन्हें कच्चे माल की प्राप्ति एवं तैयार माल की निकासी की सुविधा प्रदान की जायेगी ।

10—पिछले कुछ समय से चीनी उद्योग एक संकट की स्थिति से गुजर रहा था । मेरी सरकार द्वारा इस उद्योग की ओर विशेष ध्यान दिया गया है और प्रदेश के गन्ना किसानों को आवश्यक सुविधायें उपलब्ध कराने के उद्देश्य से गन्ना पूर्ति सम्बन्धित नीति को उदार बनाया गया है । मेरी सरकार की यह भी नीति है कि गन्ना के क्षेत्रफल को बढ़ाने के साथ-साथ ऐसे उपाय किये जायें जिनसे उपलब्ध भूमि पर अधिक से अधिक पैदावार हो सके । मेरी सरकार ने यह भी निर्णय लिया है कि सहकारी एवं सरकारी क्षेत्र की चीनी मिलों द्वारा पश्चिम व मध्य क्षेत्र में 23 रुपये तथा पूर्वी क्षेत्र में 22 रुपये प्रति क्विंटल गन्ने की कीमत दी जाये । पिछले वर्ष की अपेक्षा यह वृद्धि लगभग 45 प्रतिशत है जो अब तक सर्वाधिक है ।

11—आवश्यक वस्तुओं की वितरण प्रणाली को सुधारने हेतु मेरी सरकार ने 1 जनवरी, 1981 से प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी सस्ते गल्ले की दुकानों को सहकारी संस्थाओं को आवंटित करने का निश्चय किया है । शहरी क्षेत्रों में भी सहकारी उपभोक्ता भंडारों को इन दुकानों को आवंटित करने तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं को उपलब्ध कराने में प्राथमिकता दी जा रही है । इस वर्ष शासन ने पहली बार किसानों से सीधे धान क्रय करने की योजना बनाई ताकि किसानों को उचित मूल्य प्राप्त हो सके । इस प्रयास के फलस्वरूप लगभग 6 लाख टन धान की खरीद की गयी । आलू के वैज्ञानिक भण्डारण की समुचित व्यवस्था के लिये सरकार प्रयत्नशील है । विश्व बैंक एवं राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम की सहायता से 67 करोड़ रुपये की लागत से एक वृहद योजना बनाई गयी है जिसके अधीन अगले 5 वर्ष में 150 शीत गृह स्थापित किये जाने का प्रस्ताव है ।

12--समाज में राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सद्भावना को स्थापित करना नितान्त आवश्यक है। मेरी सरकार इस दिशा में अत्यन्त जागरूक है। समुचित वातावरण बनाने के लिये राज्य एवं जिला स्तर पर एकीकरण समितियों का गठन किया गया है। उर्दू भाषा के विकास एवं प्रसार के लिये शासन सतत् प्रयास कर रहा है। दुर्लभ पाण्डुलिपियों एवं अन्य सांस्कृतिक निधियों की सुरक्षा हेतु भी आवश्यक कदम उठाये जायेंगे।

13--अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़े वर्गों को नौकरियों में दिया गया आरक्षण सुनिश्चित किया जायगा।

14--प्रदेश में शिक्षा के विकास का क्रम जारी है। प्राइमरी एवं जूनियर हाई स्कूल भवनों की मरम्मत की आवश्यकता को देखते हुए निर्दिष्ट धनराशि में आगामी वर्ष में पांच गुना वृद्धि की जायेगी। विश्वविद्यालयों के शैक्षिक स्तर को ऊंचा उठाने तथा उनकी स्वायत्तता को दृढ़ करने, महाविद्यालयों के प्रबन्धतन्त्रों तथा उनके शिक्षकों में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण स्थापित करने हेतु एक उच्चस्तरीय समिति गठित की गई है। कोठारी कमीशन की संस्तुतियों एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसरण में, प्रथम चरण में प्रदेश के तीन आवासीय विश्वविद्यालयों एवं कतिपय महाविद्यालयों में दो वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के स्थान पर तीन वर्षीय आनर्स उपाधि का पाठ्यक्रम चलाने का विचार किया जा रहा है। मेरी सरकार ने 5 करोड़ रुपये से एक छात्र कल्याण निधि की स्थापना की है तथा छात्रों की समस्याओं पर विचार करने हेतु एक राज्य स्तरीय समिति का गठन करने का निश्चय किया है। इसके अतिरिक्त युवा कल्याण कार्यक्रमों को भी विशेष महत्व दिया जायेगा।

15--पर्वतीय क्षेत्रों के विकास के लिये बनाई जाने वाली योजनाओं में आर्थिक एवं उत्पादक कार्यक्रमों को विशेष महत्व दिया जायेगा ताकि स्थानीय जनता के आय स्रोतों में वृद्धि हो। अन्तर्क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने की दृष्टि से भी योजनायें बनाई जायेंगी और समाज के पिछड़े वर्ग के कल्याण एवं आर्थिक विकास के कार्यक्रमों को अधिक बल दिया जायगा। पूरे प्रदेश में और विशेषकर पर्वतीय क्षेत्रों में पर्यटन उद्योग को अधिक प्रभावशाली बनाया जा रहा है।

16--साढ़े छः करोड़ की लागत से हल्द्वानी (जिला नैनीताल) में एक सोयाबीन प्लान्ट लगाने का प्रस्ताव है। अभावग्रस्त ग्रामीण अंचलों में संचार की सुविधा सुलभ कराई जायेगी। मेरी सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में यथासम्भव अधिक से अधिक सड़कों एवं पुलों का निर्माण कर रही है।

17--मान्यता प्राप्त पत्रकार, जो सेवा निवृत्त हो चुके हैं तथा ऐसे दिवंगत पत्रकारों के परिवारों को आर्थिक सहायता देने हेतु मेरी सरकार ने 3 लाख रुपये के प्रारम्भिक व्यय से एक पत्रकार कल्याण संघ की स्थापना की है। स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के प्रति सम्मान प्रकट करने के उद्देश्य से सभी सेनानियों की पेंशन में एकरूपता कर सौ रुपया मासिक पेंशन देने का निर्णय भी मेरी सरकार ने लिया है।

18--हरिजनों तथा अन्य कमजोर वर्गों पर जो अत्याचार होते हैं उसके मूल में मुख्यतः आर्थिक विसंगतियां होती हैं। इन विसंगतियों को दूर करने के लिये प्रधान मंत्री, श्रीमती इन्दिरा गांधी ने बीस सूत्रीय कार्यक्रम चलाया था। स्वर्गीय संजय गांधी ने पांच सूत्रीय कार्यक्रमों का पोषण किया। वर्तमान सरकार के पूर्व जो सरकार प्रदेश में रही, उसने इन कार्यक्रमों की उपेक्षा

की। मेरी सरकार ने यह निश्चय किया है कि इन कार्यक्रमों को मिलाकर 24 सूत्रीय कार्यक्रम पुनः तेजी से प्रभावकारी ढंग से चलाया जाय ताकि जनता, विशेषकर पिछड़े वर्ग के लोगों के आर्थिक एवं सामाजिक स्तर में पर्याप्त वृद्धि की जा सके। परिवार कल्याण कार्यक्रम स्वेच्छा एवं समुचित शिक्षण के आधार पर चलाया जायेगा। चौबीस सूत्रीय कार्यक्रम के कार्यान्वयन और इस सम्बन्ध में होने वाली कठिनाइयों के निराकरण के लिये एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया गया है।

19—वर्ष 1980 में दूरस्थ ग्रामीण अंचलों तक व्यावसायिक बैंकों की सेवायें उपलब्ध कराने हेतु 180 शाखायें खोली गयी हैं। इसके अतिरिक्त विगत वर्ष प्रदेश के सात अन्य पिछड़े जिलों में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक स्थापित किये जा चुके हैं, वर्ष 1980–81 के अन्त तक 3 और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक स्थापित किये जायेंगे। प्रदेश के विकास में बैंकों का पूरा सहयोग प्राप्त किया जायगा। बिक्री–कर प्रणाली को अधिक सरल किया जायगा। अक्तूबर, 1980 से बिक्री–कर अधिकरण का गठन भी कर दिया गया है।

20—प्रदेश के यातायात के साधनों में वृद्धि करने के उद्देश्य से नयी बसें खरीदी जायेंगी। अनुबंधित प्राइवेट बसों के स्थान पर परिवहन निगम की बसों को संचालित करने का प्रयास किया जायगा। नेशनल परमिट योजना के अन्तर्गत प्रदेश को 450 अतिरिक्त परमिट का कोटा दिया गया है। अभी हाल ही में यह व्यवस्था भी की गई है कि राष्ट्रीयकृत मार्गों को छोड़कर अन्य सभी मार्गों पर यात्री गाड़ियों की संख्या पर कोई सीमा नहीं होगी।

21—मेरी सरकार गांवों के विद्युतीकरण तथा नलकूपों और उद्योगों को अधिक से अधिक विद्युत उपलब्ध कराने हेतु दृढ़ संकल्प है। प्रदेश के महत्वपूर्ण उद्योग, जैसे सीमेंट, चीनी मिलें, वनस्पति, फर्टीलाइजर्स तथा ड्रग यूनिट को विद्युत् कटौती से मुक्त रखा गया है। उद्योगों को अधिक बिजली दिलायें जाने के उद्देश्य से सिकन्दर बाद (जिला बुलन्दशहर) में 60 मेगावाट क्षमता का एक तापगृह स्थापित किया जाना प्रस्तावित है। प्रदेश की 2435 मेगावाट विद्युत् क्षमता की नयी परियोजनाओं को 1980–85 में कार्यान्वित किया जायेगा। मेरी सरकार इस बात के लिये प्रयत्नशील है कि भारत सरकार से शीघ्रातिशीघ्र लगभग 6131 मेगावाट की नयी तापीय एवं जल विद्युत् परियोजनाओं की स्वीकृति प्राप्त हो जाय।

22—अभी हाल में ही मेरी सरकार ने उत्तर प्रदेश भूमि विधि (संशोधन) अध्यादेश, 1980 प्रख्यापित किया है जिसके द्वारा लगभग 80 हजार निर्बल वर्ग के परिवारों को असामी का अधिकार प्रदान किया गया। उक्त अध्यादेश में इस बात की व्यवस्था की गई है कि अनधिकृत कब्जे करने की प्रवृत्ति पर अधिक से अधिक रोक लगे और कतिपय दशाओं में ऐसे अनधिकृत कब्जेदारों को 6 माह की न्यूनतम अवधि के लिये कारावास का दण्ड मिले। मेरी सरकार ने जून, 1980 में प्रदेश के भूमिहीन कृषि श्रमिकों को कृषि भूमि उपलब्ध कराने के उद्देश्य से एक अभियान चलाया था। इस अभियान में 19 लाख 54 हजार से अधिक आवंटियों में से लगभग 18 लाख 41 हजार आवंटियों का कब्जा सुनिश्चित कराया गया। सीलिंग भूमि के आवंटियों को एक करोड़ रुपये की धन राशि वर्ष 1980–81 में अनुदान के रूप में वितरित किये जाने का मेरी सरकार का लक्ष्य है।

23—शासन अपने सीमित संसाधनों के बावजूद प्रदेश की जनता, विशेषकर पिछड़े एवं उपेक्षित वर्ग के लिये स्वास्थ्य सेवायें उपलब्ध कराने हेतु दृढ़ संकल्प

है । चिकित्सा की सभी पद्धतियों के विकास पर पूरा ध्यान दिया जा रहा है । आयुर्वेदिक, यूनानी एवं होम्योपैथिक शिक्षा के स्तर को एकरूपता प्रदान करने एवं सुदृढ़ करने हेतु इनसे सम्बन्धित शिक्षण संस्थाओं का प्रान्तीयकरण किया जायगा । दूरस्थ ग्रामीण अंचलों में अधिकाधिक स्वास्थ्य सेवायें उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों को उच्चीकृत किया जा रहा है । प्रदेश में स्वास्थ्य शिक्षा का और विकास करने एवं चिकित्सा सुविधा बढ़ाने की दृष्टि से लखनऊ में संजय गांधी पोस्टग्रेजुएट इंस्टीट्यूट स्थापित किया जा रहा है ।

24--उत्तर प्रदेश आवास एवं विकास परिषद् द्वारा अब तक कुल 33 हजार 6 सौ भवन निर्मित किये जा चुके हैं जिसमें से 21 हजार भवन दुर्बल आय वर्गों के हैं । इसके अतिरिक्त पांच हजार नौ सौ पचास भवन निर्माणाधीन हैं । आवासीय समस्या के समाधान के लिये राज्य सरकार प्रयत्नशील है । ग्रामीण क्षेत्रों के लिये अलग से एक आवास परिषद् की स्थापना पर विचार किया जा रहा है । 'न्योडा' सहित 12 विकास प्राधिकरण नगरीय विकास के लिये सक्रिय योगदान दे रहे हैं । छठी पंचवर्षीय योजनाकाल में समस्त अभावग्रस्त ग्रामों में पेय जल उपलब्ध कराये जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है ।

25--बाढ़ के कारण स्थानीय निकायों की सड़कें बड़े पैमाने पर क्षतिग्रस्त हुई । इनकी मरम्मत त्वरित गति से करायें जाने के लिये मेरी सरकार ने नागर स्थानीय निकायों को 3 करोड़ रुपयों का अतिरिक्त अनुदान दिया है । प्रदेश के स्थानीय निकायों की खराब वित्तीय स्थिति को देखते हुये शासन ने उन्हें विशेष अनुदान दिया है ताकि स्थानीय निकायों के कर्मचारियों को, और विशेष रूप से सफाई तथा चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों को अवशेष वेतन आदि का भुगतान किया जा सके ।

26--दुग्धशाला विकास की दिशा में आपरेशन फ्लड-दो के अन्तर्गत 22 जनपदों का चयन किया जा चुका है । इस योजना के अन्तर्गत दुग्धशालाओं को सुदृढ़ करने के साथ-साथ पशुओं के उपचार एवं नस्ल सुधार की और भी अधिक व्यवस्था की जायेगी ।

27--मेरी सरकार मत्स्य पालन को प्रोत्साहन देगी । मत्स्य विभाग के अधिकारियों, कर्मचारियों और चयन किये गये उत्साही मत्स्य पालकों को समुचित प्रशिक्षण देने के लिये पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय में एक प्रसार अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की जा रही है । विश्व बैंक की सहायता से एक योजना भी चलायी जायेगी ।

28--वर्ष 1980 में प्रदेश की श्रम स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ । विगत वर्षों की तुलना में हड़ताल, ताला बन्दी एवं मानवीय दिवसों की कम हानि हुई । इसके अतिरिक्त कई बन्द और बीमार मिलों को पुनः चालू किया गया । बंधुआ मजदूरों की दशा सुधारने के लिए विशेष कदम उठाये गये । अभियंत्रण उद्योग, चीनी मिल तथा कृषि कार्य में नियोजित कर्मचारी एवं कई अन्य उद्योगों तथा नियोजनों की न्यूनतम दरों को निर्धारित या पुनरीक्षित किया जा चुका है । ऐसे नियोजन जिनके न्यूनतम वेतन को वर्ष 1977 या इससे पूर्व निर्धारित किया गया था, के सम्बन्ध में पुनरीक्षण की कार्यवाही की जा रही है । सार्वजनिक क्षेत्र में कतिपय उत्पादक इकाइयों के प्रबन्ध में श्रमिकों की भागीदारी की योजना पर भी कार्यवाही की जा रही है ।

29--वनों के क्षेत्रफल को बढ़ाने के लिये वर्ष 1980-81 में वृक्षारोपण कार्यक्रम के अन्तर्गत 2 करोड़ 45 लाख से ऊपर पौधों का रोपण किया गया ।

आगामी वर्ष में शहरी क्षेत्रों में सामाजिक वानिकी और ग्रामीण क्षेत्रों में ईंधन प्रजातियों के वृक्षारोपण की नयी योजनाओं को प्रारम्भ किया जायेगा ।

30--न्याय प्रशासन को सुदृढ़ बनाने हेतु और मुकदमों के शीघ्र निस्तारण की दिशा में सक्रिय कदम उठाये गये हैं और इन प्रयासों के परिणामस्वरूप उच्च न्यायालय में लम्बित मामलों की संख्या में पर्याप्त कमी हुई है । आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग के लोगों को निःशुल्क कानूनी सहायता प्रदान करने हेतु मेरी सरकार राज्य स्तर पर एक परिषद् तथा जिला स्तर पर समितियां गठित कर रही है ।

31--विधान मण्डल के वर्तमान सत्र में आपके समक्ष वर्ष 1981-82 का आय-व्ययक प्रस्तुत किया जायगा जिसे पारित करने की आपसे अपेक्षा की जायगी । इसके अतिरिक्त कतिपय विधायी प्रस्ताव भी आपके सम्मुख रखे जायेंगे जिसकी सूचना आपको अलग से दी जा चुकी है ।

32--माननीय सदस्यगण, मैंने संक्षेप में आपके सम्मुख अपनी सरकार द्वारा किये गये कार्य-कलापों और उसकी नीतियों का उल्लेख किया है । जनतन्त्र की सफलता के लिये यह आवश्यक है कि जहां एक ओर विरोधी पक्ष को शासन की नीतियों की आलोचना करने और उनकी कमियों को इंगित करने का अधिकार हो, वहां दूसरी ओर शासन को भी अपना कार्य करने के लिये समुचित अवसर मिले । हिंसा और तोड़-फोड़ की राजनीति समाज के हित में नहीं है । यह भी आवश्यक है कि हम सब मिलकर अपने सामाजिक एवं राजनैतिक स्तर को ऊंचा उठायें और आन्दोलनात्मक प्रवृत्तियों को छोड़कर संकीर्ण तथा दलगत राजनीति से ऊपर उठकर प्रदेश के व्यापक हित को ध्यान में रखें । मुझे आशा ही नहीं, विश्वास भी है कि आप सभी विधायकगण जनतंत्र की सफलता के लिये अपनी सही भूमिका अदा करेंगे और शासन अपनी प्रगतिशील नीतियों तथा उन पर अमल करने की प्रामाणिक योग्यता के फलस्वरूप इस प्रदेश को खुशहाल बनाने में सफल हो सकेगा ।

जय हिन्द

पी0एस0यू0पी0--1 विधान सभा--4-6-81--835 (पी0डी0) ।